

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

07-फरवरी-2017 20:40 IST

राष्ट्रपति के अभिभाषण के लिए 'धन्यवाद प्रस्ताव' पर लोकसभा में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए वक्तव्य का मूल पाठ

माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी ने संसद के दोनों सत्रों को 2017 के प्रारंभ में ही सम्बोधित किया। भारत किस तेजी से बदल रहा है, देश की जनशक्ति का सामर्थ्य क्या है, गांव, गरीब किसान की जिंदगी किस प्रकार से बदल रही है, उसका एक विस्तार से खाका सदन में रखा था। मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद देने के लिए आपके सामने उपस्थित हुआ और मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

इस चर्चा में आदरणीय श्री मल्लिकार्जुन जी, तारिक अनवर जी, श्री जयप्रकाश नारायण जी, श्री तथागत जी, सतपति जी, कल्याण बनर्जी, ज्योतिर्दित्य सिंधिया और कई वरिष्ठ महानुभावों ने चर्चा को प्राणवान बनाया। कई पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। और मैं इसके लिए चर्चा में सरीक होने वाले सभी आदरणीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूं।

कल भूकंप आया। इस भूकंप के कारण जिन-जिन क्षेत्रों में असुविधा हुई है, मैं उनके प्रति अपनी भावना व्यक्त करता हूं और केंद्र सरकार राज्य के पूरे संपर्क में है। स्थिति में कोई आवश्यकता है तो टीमें वहां पहुंच भी गई हैं। लेकिन आखिर भूकंप आ ही गया! मैं सोच रहा था कि भूकंप आया कैसे? क्योंकि धमकी तो बहुत पहले सुनी थी। कोई तो कारण होगा कि धरती मां इतनी रूठ गई होगी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं सोच रहा था कि भूकंप आया क्यों, जब कोई Scam में भी सेवा का भाव देखता है, Scam में भी नम्रता का भव देखता है तो सिर्फ मां नहीं, धरती मां भी दुखी हो जाती है और तब जा करके भूकंप आता है।

और इसलिए राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में जनशक्ति का ब्योरा दिया है। हम यह जानते हैं कोई भी व्यवस्था लोकतांत्रिक हो या अलोकतांत्रिक हो, जनशक्ति का मिजाज कुछ और ही होता है। कल हमारे मल्लिकार्जुन जी कह रहे थे कि कांग्रेस की कृपा है कि अब भी लोकतंत्र बचा है और आप प्रधानमंत्री बन पाए। वाह! क्या शेर सुनाया है। बहुत बड़ी कृपा की आपने इस देश पर, लोकतंत्र बचाया! कितने महान लोग हैं आप, लेकिन अध्यक्ष जी, उस पार्टी के लोकतंत्र को देश भलीभांति जानता है। पूरा लोकतंत्र एक परिवार को आहूत कर दिया गया है। और 75 का कालखंड माननीय अध्यक्ष जी 75 का कालखंड, जब देश पर आपताकल थोप दिया गया था, हिंदुस्तान को जेलखाना बना दिया गया था, देश के गणमान्य वरिष्ठ नेता जयप्रकाश बाबू समेत लाखों लोगों को जेल की सलाखों में बंद कर दिया गया था। अखबारों पर ताले लगा दिए गए थे। और उन्हें अंदाजा नहीं था कि जनशक्ति क्या होती है, लोकतंत्र को कुचलने के बाद ढेर सारे प्रयासों के बावजूद भी इस देश की जनशक्ति का सामर्थ्य था कि लोकतंत्र पुनः स्थापित हुआ और उस जनशक्ति की ताकत है कि गरीब मां का बेटा भी इस देश का प्रधानमंत्री बन सकता है। और इसलिए राष्ट्रपति जी ने जनशक्ति का उल्लेख करते हुए जो कहा है - चम्पारण सत्याग्रह शाताब्दी का वर्ष है। इतिहास सिर्फ किताबों की अटारी में पड़ा रहे, तो समाज जीवन को प्रेरणा नहीं देता है। हर युग में इतिहास को जानने का, इतिहास को जीने का प्रयास आवश्यक होता है। उसमें हम थे या नहीं थे, हमारे कुत्ते भी थे या नहीं थे, औरों के कुत्ते हो सकते हैं। हम कुत्तों वाली परंपरा से पले-बढ़े नहीं हैं। लेकिन देश के कोटि-कोटि लोग थे, जब कांग्रेस पार्टी का जन्म भी नहीं हुआ था। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम इस देश के लोगों ने जान की बाजी लड़ा करके लड़ा था और सबने मिल करके लड़ा था। साम्प्रदाय की कोई भेद रेखा नहीं थी, और तब भी कमल था, आज भी कमल है।

यहां बहुत ऐसे लोग हैं जो मेरी तरह आजादी के बाद पैदा हुए हैं, और इसलिए हम में से बहुत लोग हैं जिनको आजादी की लड़ाई में सौभाग्य नहीं मिला, लेकिन देश के लिए जीने का तो सौभाग्य मिला है। और हम जीने की कोशिश कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, और इसलिए आपार जनशक्ति देश ने दर्शन किए हैं। लाल बहादुर शस्त्री जी उनकी अपनी एक गरिमा थी। युद्ध के दिन थे, हर हिन्दुस्तानी के दिल में भारत विजय के भाव से भरा हुआ माहौल था। और उस समय जब लाल बहादुर शस्त्री जी ने कहा था देश ने अन्न त्याग के लिए पहल की थी।

सरकार बनने के बाद आज के राजनीतिक वातावरण को हम जानते हैं। ज्यादातर राज व्यवस्था उन राजनेताओं ने, राज सरकारों ने, केंद्र सरकारों ने जन सामर्थ्य को करीब-करीब पहचानना छोड़ दिया है। और लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा चिंता का विषय भी रहता है। मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति ने बातों-बातों में कह दिया था कि जो afford कर सकते हैं, वो गेस की subsidy छोड़ दे। जब हम जनता से कट जाते हैं, जन-मन से कट जाते हैं, 2014 में हम चुनाव लड़ रहे थे, तो एक दल इस मुद्दे पर चुनाव लड़ रहा था कि नौ सिलेंडर देंगे या 12 सिलेंडर देंगे। हमने आ करके 9 और 12 की चर्चा को कहां ले गए, हमने कहा कि जो afford कर सकते हैं, वो subsidy छोड़ सकते हैं क्या? सिर्फ कहा था। इस देश के 1 करोड़ 20 लाख से ज्यादा लोग गेस subsidy छोड़ने के लिए आगे आए।

इस सरकार और वहां बैठे हुए लोगों के गर्व का विषय सीमित नहीं है यह। यह सवा सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति का परिचायक है। और मैं इस सदन को प्रार्थना करता हूं। राष्ट्रपति जी के उद्बोधन से प्रार्थना करता हूं, राष्ट्रपति जी के उद्बोधन के माध्यम से प्रार्थना करना चाहता हूं और देश के राजनीतिक जीवन में निर्णायक की अवस्था में बैठे हुए निर्णय प्रक्रिया के भागीदारी सबको आह्वान करता हूं कि हम हमारे देश जनशक्ति को पहचाने, उस सामर्थ्य को पहचाने, हम भारत को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए जन-आंदोलन की अवधारणा लेते हुए एक सकारात्मक माहौल बना करके, देश को आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं। देखिए पहले नहीं मिले उससे ज्यादा परिणाम मिलेंगे।

और उसके कारण अनेक गुना ताकत बढ़ जाएगी। देश की बढ़ने वाली है। इसमें से कोई ऐसा नहीं है कि जो आने वाला कल बुरा देखना चाहता था। इसमें से कोई ऐसा नहीं है जो हिन्दुस्तान का बुरा चाहता था, हर कोई चाहता है गरीब का भला हो। हर कोई चाहता है, गांव-गरीब किसान को कुछ मिले। पहले भी किसी ने प्रयास नहीं किया था ऐसा कहने वालों में से मैं नहीं हूं। मैं इस सदन में बार-बार कह चुका हूं। मैं लालकिले पर से बोल चुका हूं कि अब तब जितनी सरकारें आईं, जितने प्रधानमंत्री आए, हर किसी का अपना-अपना योगदान है।

उस तरफ बैठे हुए लोगों से कभी सुनने को मिला नहीं है कि इस देश में कोई चापेकर बंधू भी हुआ करते थे, जिनकी शहादत थी आजादी में। इनके मुंह से सुनने को नहीं मिला है, कभी सावरकर जी भी थे, जो कालापानी की सजा भुगत रहे थे, तब देश आजाद हुआ है। उनके मुंह से कभी सुनने को नहीं मिल रहा है, जो भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद भी थे कि जिन्होंने देश के लिए बलि चढ़ा दी। उनके तो लगता है कि आजादी सिर्फ एक परिवार ने दिलवाई है। समस्या की जड़ वहां है।

हम देश को उसकी पूर्णता में स्वीकार करें और इसलिए जनशक्ति को जोड़ करके। हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है -

अमंत्रम अक्षरम् नास्ति। नास्ति मूलम् अनौषिधम्, अयोग्य पुरुषोनास्ति योजकः तत्र दुर्लभः।

कोई अक्षर ऐसा नहीं होता है, जिसको मंत्र में जगह पाने का potential न हो। कोई ऐसा मूल नहीं होता है, जिसकी औषध में जगह पाने का potential न हो। कोई इंसान ऐसा न होता है कि जो कुछ करके समाज और देश को दे न सके। जरूरत होती है योजकः तत्र दुर्लभ। योजक की जरूरत है। और इस संसार ने हर शक्ति को संवार करके जोड़ने का एक प्रयास किया है। और जनशक्ति के भरोसे उसके आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

स्वच्छता का अभियान, मैं हैरान हूं क्या इस बात के लिए हमें सोचना नहीं चाहिए कि आजादी के इतने साल हो गए हैं। महात्मा गांधी का नाम हम लेते हैं, गांधी के दो प्रिय चिन्ह थे। गांधी कहते थे कि आजादी से पहले भी अगर मुझे कुछ पाना है, तो मुझे स्वच्छता पानी है। हम स्वच्छता की गांधी जी की बात को लेकर आपके सामने आए। देश के सामने आए। इतनी सरकारें आईं, इतने संसद चले सत्र। क्या कभी संसद में स्वच्छता विषय पर चर्चा हुई है। और इसलिए पहली बार, यह सरकार आने के बाद, और इसलिए क्या स्वच्छता को भी हम राजनीति के एजेंडा का हिस्सा बनाएंगे। आप में से कौन है जो गंदगी में जीना चाहता है? आपके इलाके में कौन है जो गंदगी चाहता है? आप भी नहीं चाहते हैं, यहां वाले भी नहीं चाहते हैं, यहां वाले भी नहीं चाहते हैं। कोई नहीं चाहता है। लेकिन क्या हम मिल करके एक स्वर में समाज को इस पवित्र कार्य में जोड़ने को, गांधी जी के सपने को पूरा करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकते। कौन रोकता है?

और इसलिए माननीय अध्यक्षा जी, इस आपार जनशक्ति को आगे लेते हुए इस बार एक चर्चा अब यह तो सही है कि जब राष्ट्रपति जी के उद्बोधन पर चर्चा होती है और बजट भी आया होता है तो बजट की बातें भी आ जाती हैं और राष्ट्रपति जी के उद्बोधन की बातें भी आ जाती हैं। बजट पर जब चर्चा होगी तो वित्तमंत्री जी इसको विस्तार से कहेंगे, लेकिन एक चर्चा आई है, बजट जल्दी क्यों किया? भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारा पूरा आर्थिक कारोबार कृषि पर आधारित है। और ज्यादातर कृषि की स्थिति दिवाली तक पता चल जाती है। हमारे देश की एक कठिनाई है कि हम अंग्रेज जो विरासत छोड़ करके आए, उसको ले करके चल रहे हैं।

हम मई में करीब-करीब बजट की प्रक्रिया पार निकलते हैं। और एक जून के बाद हिन्दुस्तान में बारिश आना शुरू हो जाता है। तीन महीने तक बजट का उपयोग होना असंभव हो जाता है। एक प्रकार से हमारे पास कार्य करने का समय बहुत कम बच जाता है। और जब समय होता है, तब आखिरी दिनों की जो पूर्ति करने के लिए हम जानते हैं, सरकार जानती है कि

दिसंबर से मार्च तक किस प्रकार से बिल कटते हैं और किस प्रकार से रुपये खर्च किए दिखाए जाते हैं। अब यह हमने सोचना चाहिए कि अब मैं किसी की आलोचना नहीं करता। अभी भी किसी को समझ में आता है कि क्या कारण था कि आजादी के कई वर्षों तक बजट शाम को पांच बजे आता था। किसी ने सोचा नहीं बस पांच बजे चल रहा है, चल रहा है। क्यों चल रहा है भई। पांच बजे इसलिए बजट चलता था कि UK की पार्लियामेंट के हिसाब से हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के जमाने से शाम को पांच बजे बजट आया। अब हमने उसको ही चालू रखा। और बहुत कम लोगों को मालूम होगा। हम घड़ी ऐसे पकड़ते हैं, तो Indian Time है, लेकिन घड़ी ऐसे पकड़ते हैं तो London Time है। आपके पास घड़ी है तो देख लीजिए।

उसी प्रकार से... अब अटल जी की सरकार आई, तब समय बदला गया। हमारा भी प्रयास है और जब आपकी सरकार थी, तब आप लोगों ने भी बजट के समय के संबंध में एक कमिटी बनाई थी। उसका विस्तृत रिपोर्ट है। और आप भी चाहते थे कि अब यह समय बदलना चाहिए। और उन्होंने जो proposal दी है, हमने उसी को पकड़ा है, लेकिन आप लोग नहीं कर पाए। क्योंकि आपकी priority अलग है। आप चाहते नहीं थे, ऐसा नहीं है। लेकिन उस priority में नंबर कब लगेगा। तो इसलिए जो बातें आपके समय हुई हैं, उन बातों को यह बड़े गर्व से कहना चाहिए आपको, फायदा उठाइये न, यह तो हमारे समय हुआ था। अब यह भी आप भूल जाते हैं, चलें मैंने याद दिला दिया, आप इसका भी लाभ दीजिए।

रेलवे के संबंध में भी विस्तार से चर्चा जब बजट की होगी, लेकिन एक बात समझिये कि 90 साल पहले जब रेल बजट आता था, तब transportation का एक प्रमुख mode सिर्फ रेलवे था। आज transportation एक बहुत बड़ी अनिवार्यता बनी है और इकलौता रेलवे नहीं है कई प्रकार के transportation के mode हैं। जब तक हम comprehensively transport इस विषय को जोड़ करके नहीं चलेंगे, तो हम समस्याओं से जूझते रहेंगे। और इसलिए मुख्य धारा में रेलवे व्यवस्था भी रहेगी। उसमें कोई privatization को कोई तकलीफ नहीं, उसके स्वतंत्रता को कोई तकलीफ नहीं है। लेकिन सोचने के लिए सरकार एक साथ comprehensive, हर प्रकार के mode of transport को देखना शुरू करे, यह आवश्यक है। और हमने, जबसे आए हैं, हमने रेलवे में, बजट में बदलाव किया है।

आप जानते हैं कि पहले बजट में हमारे गौड़ा जी ने बताया था कि करीब 1500 घोषणाएं हुई थी और कौन मजबूत है, कौन हाऊस में ज्यादा परेशान करता है, उसको ध्यान में रख करके, उसको खुश रख करके, एक-आध चीज बोल ही दी जाती थी। वो भी ताली बजा देता था, अपने इलाके में जा करके बता देता था, यह काम हो गया है। हमने देखा, 1500 ऐसी चीजें हुई थी, जिनका कागज़ पर भी मोक्ष हो गया था, तो यह ऐसा हम क्यों करते हैं। मैं जानता हूं, इससे राजनीतिक दृष्टि से हमें नुकसान होता है। लेकिन किसी ने तो जिम्मा लेना पड़ेगा, देश में जो गलत चीजें develop हो चुकी हैं, उसको हम रोके। और Bureaucracy को suit करता है यह। ऐसी चीजें उनको suit करती है कि राजनेता ताली बजा दे, उनकी गाड़ी चला दे। मुझे नहीं चलानी है जी।

देश के सामान्य मानव की आशाओं-आकांक्षाओं के लिए फैसले लेने हैं, अच्छे फैसले लेने का प्रयास है। अच्छी तरह करने का प्रयास है। और इसलिए हम उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, हम इस काम को कर रहे हैं।

एक विषय नोटबंदी का आया है। पहले दिन से यह सरकार कह रही है हम नोटबंदी पर चर्चा करने के लिए तैयार है, लेकिन आप लोगों को लगता था कि टीवी पर कतार देखते हैं, तो कल कभी न कभी कुछ हो जाएगा, फिर देखेंगे। आपको लग रहा था कि इस समय चर्चा करने से शायद मोदी फायदा उठा जाएगा। और इसलिए चर्चा की बजाय, आपको TV bite देने में interest था। इसलिए चर्चा नहीं हुई। अच्छा है कि इस बार आपने थोड़ा बहुत संपर्क किया है और कितना बड़ा बदलाव आया है। और मुझे विश्वास है जो बारीकी से चीजों का अध्ययन करते हैं, अब तक उनका ध्यान नहीं गया है तो मैं चाहूंगा कि उनका ध्यान जाए। 2014 के पहले का वक्त देख लीजिए। 2014 मई के पहले का। वहां से आवाज़ उठती थी कि कोयले में कितना खाया? 2G में कितना गया, जल करप्शन में कितना गया, वायु करप्शन में कितना गया। आसमान के करप्शन में कितना गया। कितने लाख गए, यही वहां से आवाज़ आती थी। यह मेरे लिए खुशी की खबर है कि जब वहां से आवाज़ आती थी, मोदी जी कितना लाए, कितना लाए, कितना लाए। तब आवाज़ उठती थी कि कितना गया। अब आवाज़ उठ रही है कितना लाए, इससे बड़ा जीवन का संतोष क्या हो सकता है। यही तो सही कदम है।

दूसरा हमारे खड़े जी ने कहा कि कालाधन हीरे-जवाहरात में है, सोने में है, चांदी में है, property में है। मैं आपकी बात से सहमत है लेकिन यह सदन जानना चाहता है, यह ज्ञान आपको कब हुआ। क्योंकि इस बात का कोई इंकार नहीं कर सकता है कि भ्रष्टाचार का प्रारंभ नकद से होता है। उसकी शुरुआत नकद से होती है। परिणाम में Property होती है, परिणाम में Jewelry होती है, परिणाम में Gold होता है। शुरुआत नकद से होती है। दूसरा आपको मालूम है कि यही बुराईयों के केंद्र में है। बेनामी Property है, जवाहरात है, Gold है, चांदी है, जरा आप लोग बताइये 1988 में जब श्रीमान राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री थे, पंडित नेहरू से भी ज्यादा बहुमत इस सदन में आपके पास था, दोनों सदन में आपके पास था। पंचायत से पार्लियामेंट तक सब कुछ आपके कब्जे में था। आप ही आप थे, कोई नहीं था।

1988 में आपने बेनामी संपत्ति का कानून बनाया। आपको जो ज्ञान आज हुआ है, क्या कारण था कि 26 साल तक उस कानून को notify नहीं किया गया? क्या कारण था, उसको दबोचकर रखने का। अगर उस समय notify किया होता, तो जो ज्ञान आज आपको हुआ है। 26 साल पहले की स्थिति थोड़ी ठीक थी। देश के बहुत जल्दी साफ-सुथरा होने की दिशा में, एक काम कम हो जाता। वो कौन लोग थे, जिनको कानून बनने के बाद ज्ञान हुआ कि अब कानून दबाने में फायदा है। वो किस परिवार.. आप इससे बच नहीं सकते, आप किसी का नाम दे करके आप बच नहीं सकते। आपको जवाब देना पड़ेगा देश को। जो ज्ञान आज हुआ है और यह सरकार है, जिसने नोटबंदी से पहले, पहला कदम उनके खिलाफ उठाया। और मैं आज इस सदन के माध्यम से भी देशवासियों को कहना चाहता हूं, आप कितने ही बड़े क्यों न हों, गरीब के हक का आपको लौटना पड़ेगा। और मैं इस रास्ते से पीछे लौटने वाला नहीं हूं। मैं गरीबों के लिए लड़ाई लड़ रहा हूं, और गरीबों के लिए लड़ाई लड़ता रहूंगा। इस देश के गरीबी के मूल में, इस देश में गरीबी के मूल में, देश की पाथ-पाथ प्राकृतिक सम्पदा की कमी नहीं थी, देश के पास मानव संसाधनों की कमी नहीं थी, लेकिन देश में एक ऐसा वर्ग पनपा, जिन्होंने लोगों के हक लूटते रहे, उसी का नतीजा है कि देश जिस ऊंचाई पर पहुंचना चाहिए था, नहीं पहुंच पाया।

एक बात मैं कहना चाहूंगा, हम यह जानते हैं कि अर्थव्यवस्था को इस बात को कोई इंकार नहीं कर सकता है, एक सामान्तर अर्थव्यवस्था develop हुई थी। और ऐसा नहीं है ये काम भी आपके संज्ञान में पहले भी आया था। ये विषय आप ही की सरकार की, आप की कमेटियों ने भी आपको सुझाया था। जब इंदिरा जी राज करती थी तब यसवंतराव जी चौहान यह विषय ले करके उनके पास गए थे। और तब जा करके उन्होंने कहा था कि क्यों भाई कांग्रेस को चुनाव नहीं लड़ने का। आपको निर्णय गलत नहीं था, चुनाव का डर था। हमें चुनाव की चिंता नहीं है, देश की चिंता है, इसलिए हम निर्णय लिए। इसलिए हम निर्णय लिए। और यह बात निश्चित है कोई इंकार नहीं कर सकता है, कि कोई भी व्यवस्था में 'कैश कितना, cheque को ना', यह कारोबार develop हो चुका है। और एक प्रकार से जीवन का हिस्सा बना है, जब तक आप उसको गहरी चोट नहीं लगाओगे तब तक स्थिति से बाहर नहीं आओगे और इसलिए हमने जो फैसले किए हैं।

आपने किस प्रकार से देश चलाया है, ऐसा लगता है कि कुछ दिलों के दिलों-दिमाग में चार्वाक का मंत्र उनके ज़िंदगी में बहुत काम आ गया है। उन्होंने चार्वाक के ही मंत्र को लेकर ही शायद और तभी जा करके कोई देश अंग्रेजी कवि के उल्लेख करते हुए यह भी कह देते थे बड़े-बड़े व्यक्ति कि मरने के बाद क्या है! क्या देखा है! अभी तो चार्वाक का तत्व-ज्ञान है। मैं उस सदन में जाऊंगा तब इसका उल्लेख detail में करूंगा, लेकिन चार्वाक कहते थे:

यवज्जीवेत्, सुखम् जीवेत्।

ऋणम् ऋत्वा, धितम् पिबेत्।।

भस्मिभूतस्य देहस्य।

पुनर्गमनम् कुतः?

जब तक जियो मौज करो। जियो, जब तक जियो मौज करो। चिंता किस बात की कर्ज करो, और घी उस जमाने में यह संस्कार थे इसलिए घी कहा, भाई भगवंत मान नहीं तो और कुछ पीनो को कहते। लेकिन उस समय ऋषियों ने, महा-संस्कार थे, उन्होंने घी कि शायद आज का जमाना होता तो कुछ और पीने की चर्चा करनी पड़ती। लेकिन इस प्रकार की philosophy से कुछ लोगों को लगता है कि जब अर्थव्यवस्था अच्छी चल रही थी तो आपने ऐसे समय, ऐसा निर्णय क्यों किया? यह बात सही है। आप जानते हैं अगर आपको कोई बीमारी हो और डॉक्टर कहता है कि operation करना है, operation बहुत जरूरी है फिर भी वह कहता है, पहले भाई आपको शरीर ठीक करना पड़ेगा। Diabetes control करना

पड़ेगा, ठिगना control करना पड़ेगा, सात-आठ-बीस और मशवरा, फिर बाद में operation करेगा। जब तक वह स्वस्थ नहीं होता है, operation करना पसंद नहीं करता है डॉक्टर, कितनी भी गंभीर स्थिति हो। Demonetisation के लिए यह समय इतना पर्याप्त था कि देश की अर्थव्यवस्था तंदुरुस्त थी। अगर दुर्बल होती, हम यह कतई सफलतापूर्वक नहीं कर पाते। यह तब सफल होता है, ताकि अर्थव्यवस्था मजबूत थी और इसी समय।

दूसरा इसका समय, ऐसा मत सोचिए कि हड़बड़ी में होता है। इसके लिए मोदी का अध्ययन करना पड़ेगा आपको। और आप देखिए हमारे देश में साल भर में जितना व्यापार होता है, करीब-करीब उतना ही व्यापार दीवाली के दिनों में हो जाता है। यानी 50% दीवाली के दिनों में, 50% साल भर में। एक प्रकार से पूरा उद्योग व्यापार, किसानों सब काम दीवाली के पास उसकी Peek पर पहुंच जाता है। उसके बाद natural lull period हमारे देश में हमेशा होता है। दीवाली के बाद दुकानदार भी 15-15 दिन बंद रख करके बाहर चले जाते हैं, लोग भी अपने आप घूमने जाते हैं। यह proper time था कि जबकि सामान्य कारोबार ऊंचाई पर पहुंच गया है उसके बाद अगर 15-20 दिन दिक्कत होती है और फिर 50 दिन में ठीक-ठाक हो जाएगा और मैं देख रहा हूं जो मैंने हिसाब-किताब कहा था, उसी प्रकार से गाड़ी चल रही है।

और इसलिए आप यह भी जानते हैं, आप यह जानते हैं, एक जमाना था, Income Tax Department की मन-मर्जी पर.. एक समय था जब देश में Income Tax अधिकारी मन-मर्जी पड़े वहां जा करके धमकते थे और बाकी क्या होता था पुराना इतिहास कुछ भी दोहराने की जरूरत नहीं है।

नोटबंदी के बाद सारी चीजें record पर है। कहां से आया, किसने लाया, कहां रखा। अब उसमें से top नामों को technology के द्वारा, data-mining के द्वारा निकाल दिए गए हैं। अब Income Tax Office को जाना नहीं है सिर्फ SMS करके पूछना है भाई कि जरा बताई कि detail क्या है? आप देखिए किसी भी प्रकार का अफसर-शाही के बिना जिसको भी मुख्य धारा में आना है, उसके लिए एक अवसर प्राप्त हो चुका है। और मैं मानता हूं इससे बहुत Clean India, जैसे 'स्वच्छ भारत' का मेरा अभियान चल रहा है, वैसा ही आर्थिक जीवन में 'स्वच्छ भारत अभियान' भी बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

और बेनामी संपत्ति का कानून पास हो चुका है, notify हो चुका है। और जैसा खड़गे जी ने कहा वहीं पर सबकुछ है। अच्छा सुझाव आपने दिया है। हम भी कुछ करके दिखाएंगे। और जो भी सुन रहे हैं वो भी समझें और उसके प्रावधान बढ़ लें कि कितना बड़ा कठोर कानून है, जिसके पास भी बेनामी संपत्ति है उनसे मेरा आग्रह है अपने Chartered Accountant से जरा पूछ लें कि आखिर के प्रावधान क्या है? और इसलिए मेरा सबसे आग्रह है कि मुख्यधारा में आईये देश के गरीबों का भला करने के लिए आप भी कुछ contribute कीजिए।

जहां-जहां कभी-कभी लगता है कि यह निर्णय अचानक हुआ क्या। मैं जरा जानकारी देना चाहता हूं, जिस दिन हमारी सरकार बनी, सबसे पहला काम किया कैबिनेट में, SIT बनाई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था लंबे अरसे तक लटका पड़ा था कि विदेश के कालेधन के लिए SIT बनाओ। हमने बनाई, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था उस प्रकार बनाई। और सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा था: 26 March, 2014, Since 1947 for 65 Years nobody thought of bringing the money stays away in the Foreign Banks to the country. The Government has failed in its role for 65 Years. This Court feels that you have failed in your duty. So is the given order for the appointment of committee headed by the former judges of this Court. Three years have passed, but you have not done anything to implement the order. What have you done? Except for filing one report you have done nothing.

यह 24 मार्च, 2014 को सुप्रीम कोर्ट ने उस सरकार को कहा है। वहीं तो मैं कह रहा था वो जमाना तब आवाज उठती थी कि कितना गया। अब आवाज उठ रही है कि कितना आया और आते रहेगा। आप देखिए एक के बाद एक, एक बाद एक देखिए विदेश में जमा कालेधन के खिलाफ नया कठोर कानून बनाया। प्रोपर्टी जब्त करने की बात कही। इस बार भी बजट में एक नया कानून कही गई है। सजा भी 7 साल से 10 साल कर दी। Tax Havens जो थे मॉरीशस, सिंगापुर वगैरा उस पुराने जो नियम आप बना करके गये थे, उसको हमने बातचीत की। उनको समझाया, हमारी परिस्थितियां समझायी। उसको हम ले आये। हमने स्विटजरलैंड से समझौता किया। वो real-time information देंगे। कोई भी हिन्दुस्तानी नागरिक पैसा रखेगा तो उसका पता चल जाएगा। हमने अमेरिका सहित कई देशों के साथ इस प्रकार के समझौते किए हैं, जहां पर हमारा कोई भी भारतीय नागरिक, भारतीय मूल का व्यक्ति पैसे रखेगा, तो उसकी जानकारी भारत को मिलेगी।

उसी प्रकार से प्रोपर्टी बिक्री, 20 हजार से ज्यादा नकद नहीं, इसके चलते हमने नियम किया। Real-Estate Bill को पास किया। ज्वैलरी के मार्केट में भी 1% Excise डाली ताकि चीजों को streamline करना था। किसी को परेशान नहीं करना था।

और आप ही लोग हैं। इस देश सदन में इधर हो या उधर हो। मुझे चिट्ठियां आई हैं, जब हमने कहा कि दो लाख से ज्यादा कोई अगर Jewelry purchase करता है, तो उसके PAN Number देना होगा। मैं हैरान हूं, कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ भाषण देने वाले लोग मुझे चिट्ठियां लिखते थे कि PAN Number मांगने का नियम रद्द कर दीजिए, ताकि लोग cash money से सोना लेते रहें, गहने लेते रहें और काला बाजार चलता रहे। हम टिके रहे, उसको करके दिखाया, एक-एक कदम उठाया। मैं जानता हूं राजनीतिक फायदे के लिए कोई काम ऐसा नहीं कर सकता, वरना तो आप पहले कर लेते। यह कठिनाई है, लेकिन देश का भला करने के लिए निर्णय करने दे और गरीबों का भला करना था, इसलिए निर्णय किया।

दो लाख से ज्यादा किसी सामान पर, दस लाख से ज्यादा महंगी गाड़ी पर 1% अतिरिक्त टैक्स लगा दिया। हमने Income Text declaration scheme भी लाई। और अब तक इस scheme में सबसे ज्यादा पैसा लोगों ने declare किया। 1100 से ज्यादा पुराने कानून हमने खत्म किये। और यहां बताया गया कि आपने नोटबंदी के संबंध में कोई कहता है 150 बार, कोई कहता है 130 बार, वह सब अलग-अलग आंकड़े बोल रहे हैं, इतने नियम बदले। बहुत अच्छा याद रखते हैं।

अब मैं आपको बताना चाहता हूं यह तो ऐसा काम था, जिसमें हम जनता की कोई तकलीफ तुरंत समझने के बाद रास्ता खोजने का प्रयास करते थे। दूसरा, जिन लोगों को सालों से लूटने की आदत लगी है, वो रास्ता खोजते थे, तो हमें बंद करने के लिए कुछ न कुछ करना पड़ता था। लड़ाई का मौसम था। एक तरफ देश को लूटने वाले थे, और एक तरफ देश को ईमानदारी की तरफ ले जाने की तरफ ले जाने का मोर्चा लगा हुआ था। लड़ाई पल-पल चल रही थी। वो एक तू डाल-डाल में पात-पात इस प्रकार से लड़ाई चल रही थी। लेकिन जो आप लोगों का बड़ा प्रिय कार्यक्रम है, जिसको ले करके आप बड़ी पीठ थपथपा रहे हैं। वैसे उसके लिए आपको हक नहीं हैं, क्योंकि जब इस देश पर राजा-रजवाड़ों का शासन था, तब भी गरीबों के लिए राहत नाम से योजनाएं चलती थीं। उसके बाद भी हिन्दुस्तान में Food for work के नाम से कई योजनाएं। देश आजाद होने के बाद नौ प्रकार से अलग-अलग नामों से चली हुई योजना चलते-चलते-चलते उसने एक नाम लिया, जिसको MGNREGA कहते हैं। कई यात्रा करके आया हूं और हर राज्य में जहां कम्युनिस्टों की सरकार थी उन्होंने भी पश्चिम बंगाल में किया था, जहां शरद पवार की सरकार थी, महाराष्ट्र में किया था। गुजरात में भी जो कांग्रेस की सरकार थी.. हर देश में किसी न किसी ने आजादी के बाद इस प्रकार के काम किए ही किए थे। हर किसी ने किए थे, तो वो कोई नई चीज नहीं थी, लेकिन नाम नया था। लेकिन देश को और आपको खुद को भी जान करके आश्चर्य होगा कि शांत रूप से इतने सालों से चली हुई योजना के बाद भी MGNREGA में 1035 बार परिवर्तन किए हैं। 1035 बार, नियम बदले गए। आप कभी अपने तो आइने में झांक करके तो देखिए। और उसमें तो लड़ाई नहीं थी। इतने बड़े दबाव में काम करना नहीं था। क्या कारण था कि MGNREGA जैसा एक, जो लम्बे अर्से से चल रहा था। उसको भी आपको आने के बाद 1035 बार परिवर्तन करना पड़ा। और इसलिए नियमों में परिवर्तन किया। Act एक बार हो गया। Act 1035 बार परिवर्तित नहीं हुआ है।

और इसलिए मैं कहना चाहूंगा, आज मुझे आपको काका हाथरसी की कविता के शब्द सुनाता हूं और मैं काका हाथरसी को याद करता हूं, तो कोई उत्तर प्रदेश के चुनाव के साथ न जोड़े। क्योंकि उनके हर चुनाव में काका हाथरसी की बातें चलती रहती थी। काका हाथरसी ने कहा था -

अंतर पट्ट में खोजिये, छिपा हुआ है खोट और काका हाथरसी ने आगे कहा है 'मिल जायेगी आपको, बिल्कुल सत्य रिपोर्ट।'

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं एक बात की ओर भी ध्यान देना चाहता हूं, सरकार नियमों से चलती है, संविधानिक जिम्मेदारियों के साथ चलती है। जो नियम आपके लिए थे, वो नियम हमारे लिए भी हैं। लेकिन फर्क कार्य संस्कृति का होता है। नीतियों की ताकत भी नियत से जुड़ी हुई होती है। अगर नियत में खोट है तो नीतियों की ताकत माइनस में चली जाती है, जीरो छोड़ो, माइनस में चली जाती है और इसलिए हमारे देश में उस कार्य संस्कृति को भी समझने की जरूरत है। जब भी हम कुछ बोलते हैं यहां से यह तो हमारे समय था, यह तो हमारे समय था। तो मुझे लग रहा है मैं ही उसी पर खेल्न थोड़ा। आपके मैदान में खेलने आना पसंद करूंगा मैं। और इसलिए ऐसा क्यों हुआ। ऐसा तो नहीं है कि आपको ज्ञान नहीं था। आपको ज्ञान कल ही हुआ ऐसा थोड़ा हुआ। आपको जानकारी थी, लेकिन महाभारत में कहा इस प्रकार से-

‘जानामि धर्मम् न च मे प्रवृत्तिः ‘जानामि अधर्मम् न च मे निवृत्तिः ।

धर्म क्या है? यह तो आप जानते हैं, लेकिन वो आपकी प्रवृत्ति नहीं थी। अधर्म क्या है वो भी जानते थे, लेकिन उसे छोड़ने का आपको सामर्थ्य नहीं था। मैं बताता हूँ जी, अब मुझे कहिए - National Optical Fiber Network अगर मैं उसके लिए कुछ भी कहूँगा, तो वहाँ से आवाज़ उठ आई यह तो हमने शुरू किया था। मैं हमने शुरू किया था, उसी से शुरू करना चाहता हूँ। अब देखिए National Optical Fiber Network, 2011 से 14 तीन साल सिर्फ 59 गांव में यह Optical Fiber Network लगा और उसमें भी last mile connectivity का प्रावधान नहीं था। Procurement भी पूरी तरह centralized था, वो तो क्या कारण है सब जानते हैं। अब आप देखिए, हमने ..पूरी कार्य संस्कृति कैसे बदलती हैं, approach कैसे बदलता है। सबसे सब राज्यों को पहले साथ लिया। Last mile connectivity मतलब स्कूल में Optical Fiber Network मिलना चाहिए, अस्पताल में मिलना चाहिए, पंचायत घर में मिलना चाहिए। इन प्राथमिकताओं को तय किया। Procurement क्या था, वो भारत सरकार के हाथ से रख करके हमने उसको decentralized कर दिया। और परिणाम यह आया कि इतने कम समय में अब तक 76000 गांवों में Optical Fiber Network, last mile connectivity के साथ पूरा हो गया।

दूसरा, अभी यहां बताया जा रहा था कल कि आप less-cash society या cash-less society के लिए बोल रहे हैं। लोगों के पास क्या हैं? मोबाइल.. मैं हैरान हूँ, मैं तो 2007 के बाद से जितनी चुनाव सभाएं सुनी हैं आपके नेता गांव-गांव जा करके कहते हैं कि राजीव गांधी computer revolution लाएं, राजीव गांधी mobile phone लाएं, राजीव गांधी ने गांव-गांव connectivity कर दी। आप ही का भाषण है और जब मैं आज कह रहा हूँ कि उस मोबाइल का उपयोग bank में भी convert किया जा सकता है, तो कह रहे हैं कि mobile phone ही कहां हैं। यह समझ नहीं आ रहा है भई। आप कह रहे हैं कि हमने इतना कर दिया और जब मैं उसमें कुछ अच्छा जोड़ रहा हूँ, तो कह रहे हैं कि वो तो है ही नहीं भई। तो यह क्या समझा रहे थे आपको जी। क्यों ऐसा कर रहे हो ? दूसरी बात है कि आप भी मानते हैं, मैं भी मानता हूँ कि पूरे देश के पास सब नहीं हैं। लेकिन मान लो कि अगर 40% के पास है, तो क्या उन 40% लोगों को इस आधुनिक व्यवस्था से जोड़ने की दिशा हम सबका सामूहिक प्रयत्न रहना चाहिए कि नहीं रहना चाहिए? 60% का चलो बाद में देखेंगे। कहीं तो शुरू करें और इसका लाभ है digital currency को हम कम न आंके। आज हमारा एक-एक ATM, उसका संभालने के लिए average पांच पुलिस वाले लगते हैं। Currency को एक से दूसरे जगह ले जाने के लिए सब्जी और दूध के mobilization के लिए जितना खर्चा होता है, उससे ज्यादा उसके mobilization से खर्चा होता है। अगर हम इस बातों को समझें तो, जो कर सकते हैं, सब नहीं कर पाएंगे, हम समझ सकते हैं, लेकिन जो कर सकते हैं, उनको करने के लिए प्रोत्साहित करना यह नेतृत्व का काम होता है, किसी भी दल का हो, उससे लोगों का भला होने वाला है। अभी मुझे कोई बता रहा था एक सब्जी वाले ने शुरू किया। कल कोई मुझे रिपोर्ट दे करके गया। उसको पूछा तेरा क्या फायदा है। बोले साहब पहले क्या होता था एक तो मेरे ग्राहक Permanent थे। सबको मैं जानता था। अब मान लीजिए 52 Rupees का सब्जी लिया तो फिर वो मैडम कहती थी कि चल जेबों में पैसे नहीं हैं, 50 रुपये का नोट है ले लो, तो मेरे दो रुपये चले जाते थे। अब मैं भी बोल नहीं पाता था और बोलने में लगाता था हिसाब तो साल भर में मेरा आठ सौ, हजार रुपया, ये रुपया दो रुपया न देने में ही हो जाता था। बोले इसके बाद BHIM App लगाने के बाद 52 रुपया है तो 52 रुपया मिलता है। 53 रुपया है तो 53 मिलता है। 48 Rupees, 45 पैसा है तो पूरा मिलता है। बोले मेरा तो आठ सौ हजार रुपया बच गया।

देखिए चीजें कैसे बदलती हैं और इसलिए हम कम से कम आप मोदी का विरोध करें, कोई बात नहीं आपका काम भी है, करना भी चाहिए। लेकिन जो अच्छी चीजें हैं उसको आगे बढ़ाएं। जहां मान लीजिए गांव में नहीं है। शहरों में है तो आगे तो बढ़ाओं, उसको योगदान करो, देश का भला होगा। हमको और किसी व्यक्ति का भला नहीं है और इसलिए मैं आग्रह करूंगा कि ऐसी चीजों में हम मदद कर सकते हैं, तो करनी चाहिए।

कार्य और संस्कृति कैसे बदलती है। अब ये रोड बनाना क्या हमारे आने के बाद हुआ क्या। ये टोडरमल्ल के जमाने से चल रहा है। शेरशाह सूरी के जमाने से चल रहा है, तो यह कहना कि ये तो हमारे जवाने से था, हमारे जमाने से था। अब कहाँ-कहाँ जाओगे भाई। फर्क क्या है पिछली सरकार में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना प्रति दिन 69 किलोमीटर होती थी। हमारे आने के बाद 111 किलोमीटर हो गयी है, यह फर्क होता है।

और और हमने रोड बनाने में Space Technology का उपयोग किया है। Space Technology से photography होती है, monitoring होता है। हमने रेलवे में Drone का उपयोग किया है। photography करते हैं, काम का हिसाब लेते हैं। कार्य संस्कृति Technology की मदद से कैसे बदलाव लाया जा सकता है।

आवास योजना, ग्रामीण आवास योजना, राजनीतिक फायदा उठाने के लिए नामों को जोड़ करके उसका जो उपयोग हुआ, वो हुआ। लेकिन फिर भी आपके समय में एक साल में, 1083000 घर बनते थे। इस सरकार में एक वर्ष में 2227000 घर बने। National Urban Renewal Mission एक महीने में 8017 घर बने। हमारी योजना से 13530 घर बने हैं।

रेलवे- पहले Broad Gauge Railway का commissioning एक साल में 1500 किलोमीटर हुआ करता था। पिछले साल यह बढ़ करके 1500 किलोमीटर से सामने 3000 किलोमीटर, double और हम 3500 किलोमीटर तक और इसलिए यह परिणाम अचानक नहीं आए। योजनाबद्ध तरीके से, हर पल, हर चीज का monitor करते-करते यही लोग, यही कानून, यही मुलाजिम, यही फाइल, यही माहौल उसके बाद भी बदलाव लाने में तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। और यह अचानक नहीं होता है।

इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है और इसलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है -

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

उद्यम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, न कि मनोरथों से, सोये हुए सिंह के मुख में हिरण आ करके प्रवेश नहीं करता है, उसको भी शिकार करना पड़ता है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, कुछ मूलभूत परिवर्तन कैसे आते हैं। हम जानते हैं कि राज्यों के Electricity Board-DISCOM सारे राज्य संकट में हैं। तभी तो हिन्दुस्तान में लालकिले पर से इसकी चिंता की गई थी प्रधानमंत्री के द्वारा। इतनी हद तक यह हालत बिगड़ी हुई थी। पिछले दो साल में बिजली उत्पादन में क्षमता बढ़ी। Conventional Energy उसको जोड़ा गया। Transmission line उसको बढ़ाया गया, Solar Energy को लाया गया। 2014 में 2700 मेगावाट थी, आज हम उसको 9100 मेगावाट पहुंचा दिए हैं। सबसे बड़ी बात, DISCOM योजना के कारण, उद्यम योजना के तहत राज्यों को उस योजना जब वो सफल कर पाएंगे करीब-करीब 1 करोड़ 60 हजार से ज्यादा रकम राज्यों की तिजोरी में बचने वाली है और राज्यों के साथ जोड़ करके अगर भारत सरकार ने 1 करोड़ 60 हजार की घोषणा कर दी होती, तो चारों तरफ कहते कि वाह, मोदी सरकार ने इतना पैसा दिया। हमने योजना ऐसी बनाई कि राज्यों के खजानों में 1 लाख 60 हजार करोड़ रुपया DISCOM के द्वारा, उद्यम योजना के द्वारा बचत होने वाली है, जो उनके लिए विकास के काम आने वाली है और ऊर्जा क्षेत्र का जो बोझ है उस बोझ से वो बचने वाले हैं।

कोयला- आप जानते हैं कोयला जहां से निकलता है, उसके नजदीक नहीं दिया जाता था। दूर-दूर से देखा, क्यों? तो बोले रेलवे को थोड़ा कमाई हो जाए। हमने कहा कमाल हो भई, रेलवे की कमाई के लिए इतना सारा बोलते हैं, हमने rationalize कर दिया, जहां नजदीक है उसी को वहां से कोयला मिलेगा, कोयले का खर्चा हो, उस दिशा में प्रयास किया और उसके कारण करीब-करीब कायले में 1300 करोड़ रुपये transportation खर्च कम हुआ है।

LED Bulb- अब यह तो हम नहीं कहते कि हम LED Bulb लाए। वैज्ञानिक शोध हुई, आपने भी शुरू किया। लेकिन आपके समय वो LED Bulb करीब तीन सौ, साढ़े तीन सौ, तीन सौ अस्सी उस रुपये में चलते थे। LED Bulb से energy saving होता है हमने बड़ा mission रूप में काम उठाया और करीब-करीब इतने कम समय में पिछले आठ-नौ महीने में इस योजना को बल दिया है। इतने कम समय में 21 करोड़ LED Bulb लगाने में हमने सफलता पाई है और तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। और अब तक जो LED Bulb लगे हैं उसके कारण परिवारों में जो बिजली का बिल आता था, वो जो बिजली का बिल कम हुआ है, वो परिवारों में करीब-करीब 11000 करोड़ रुपयों की बचत हुई है। अगर किसी सरकार ने बजट में 11000 करोड़ बिजली उपभोक्ताओं को देने का तय किया होता, तो अखबारों में Head-Line बनती। हमने LED Bulb लगाने मात्र से 11000 करोड़ बिजली का बिल सामान्य मानव के घर में कम किया है। कार्य संस्कृति अलग होती है, तो कैसा परिवर्तन आता है इसका यह नमूना है।

यहां पर हमारे विपक्ष के नेता Scheduled Casts के बजट को ले करके भाषण कर रहे थे। लेकिन बड़ी चतुराई पूर्वक 13-14 के आंकड़ों को उन्होंने बोलना अच्छा नहीं माना। तुक्का लगाते थे 13-14 आता था अटक जाते थे। Scheduled Casts Sub-Plan कुल आवंटन 2012-13- 37113; 13-14- 41561; 16-17- 38833; 16-17 - 40920, 33.7% Increase और इस साल के बजट में 52393; और इसलिए सत्य सुनने के लिए हिम्मत चाहिए एक और मैं काम बताना चाहता हूँ, ये सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाली सरकार है। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने के समय किस प्रकार से काम किए जाते हैं।

17 मंत्रालय के 84 योजनाएं, हमने Direct Benefit Transfer AADHAR योजना के साथ जोड़ करके उसको आगे किया और 32 करोड़ लोगों को 1 लाख 56 हजार करोड़ रूपया Direct Benefit Transfer स्कीम में दिया गया। अब उससे क्या लाभ हुआ है, और इसको समझना होगा कि किस प्रकार से हर गली-मौहल्ले में चोरी लूट की व्यवस्था रही थी। और मैं जानता हूँ इतनी बारीकी से हर जगह पर चोरी लूट को रोकूंगा तो मेरे पर कितना तूफान होगा। और तब जा करके मैंने गोवा में बोला था कि मैं जानता हूँ मैं ऐसे निर्णय करता हूँ। मेरे पर क्या बीतेगी। मेरे को मालूम है। आज भी मालूम है। और इसमें दोबारा कहता हूँ ऐसे-ऐसे बड़े लोगों को तकलीफ हो रही है और ज्यादा होने वाली है। उसके कारण मुझे अंदाजा है मुझ पर क्या जुल्म होने वाले हैं। उसके लिए तैयार हूँ। क्योंकि देश के लिए, मैंने यह प्रण ले करके निकला हुआ इंसान हूँ और इसलिए मैं कदम उठा रहा हूँ।

PAHAL योजना हमारे यहां गैस सिलेंडर जाते थे, सब्सिडी मिलती थी, जब उसको आप AADHAR योजना से जोड़ा तो उसका leakage करीब-करीब 26 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा leakages रूका, जिसका परिणाम यह आया कि डेढ़ करोड़ गरीब परिवारों को गैस का कनेक्शन देने हम सफल हुए हैं। आप जरा अध्ययन कर लीजिए मैं जब सदन में बोलता हूँ तो जिम्मेवारी के साथ बोलता हूँ। पिछले ढाई वर्षों में, फर्जी राशनकार्ड, गरीब आदमी के हक छीनने का काम, फर्जी राशनकार्ड वाले करते थे। गरीब को जो मिलना चाहिए उसको बिचौलिए अपने यहाँ फर्जी राशन कार्ड के ठप्पे रखते थे और माल चुरा लेते थे और कालेबाजारी में बेचते थे जब से हमने Technology का उपयोग किया AADHAR का उपयोग किया करीब-करीब 4 करोड़, 3 करोड़ 95 लाख, करीब-करीब चार करोड़ फर्जी राशन कार्ड पकड़े गए, उससे करीब-करीब 14 हजार करोड़, 14 हजार करोड़ इतनी रकम बिचौलिए मार खाते थे, गरीब के हक का मार खाते थे, वो मुख्य धारा में आया और गरीबों की तरफ गया।

MGNREGA- MGNREGA में AADHAR से payment दिया जाता है, direct transfer पैसा होता है करीब 94% success मिली है। और उसका परिणाम ये हुआ है कि leakages 7633 Crore Rupees, उसका leakage अब तक बच पाया है और ये हर वर्ष एक का वर्ष नहीं आने वाले हर वर्ष में बचने वाला है।

और आगे भी जो है National Social Assisting Programme (NSAP) करीब-करीब 400 करोड़ रूपया है जिसका कोई लेनदार नहीं मिल रहा है, लेकिन पैसे जाते थे कुछ तो ऐसी चीजें पायी गयीं जिस बेटे का जन्म नहीं हुआ वो बेटे विधवा भी हो गयी और खजाने से धन भी जा रहा है। इन सब को रोकने की कार्य संस्कृति को ले करके हम चले हैं। Scholarship, ऐसे कई चीजें हैं एक मोटा-मोटा अंदाज लगाता हूँ। एक वर्ष में और हर वर्ष अभी तो मैं कह रहा हूँ शुरुआत है 49500 Crore Rupees, ये बिचौलिए के पास जाते हुए रूक गए। आप कल्पना कर सकते हैं करीब-करीब 50 हजार करोड़ रूपया जो गरीबों के हक का था वो बिचौलिए खा जाते थे corruption के नाम पर लूट के नाम पर उनको रोकने का काम उसके लिए एक बड़ी हिम्मत लगती है और वो करके दिखया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं कार्य संस्कृति का एक उदाहरण भी देना चाहता हूँ किसानों की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। हर वर्ष राज्यों के मुख्यमंत्री भारत सरकार को इस बात की चिट्ठी लिखते थे कि हमें यूरिया मिलना चाहिए जब मैं मुख्यमंत्री था तब यह लिखता रहता था और यूरिया पाने में बहुत बड़ी दिक्कत होती थी। मैं आज बड़े संतोष के साथ कहता हूँ कि पिछले दो साल से किसी मुख्यमंत्री को यूरिया के लिए चिट्ठी नहीं लिखनी पड़ी। कहीं यूरिया के लिए कतार नहीं लगी है, कहीं यूरिया के लिए लाठीचार्ज नहीं हुआ है, लेकिन ये बात हम भूले नहीं पुराने अखबार निकाल दीजिए, किसानों को यूरिया पाने के लिए कितनी तकलीफ होती थी। अब मुझे बताइए नीम-कोटिंग, नीम-कोटिंग इसका ज्ञान सिर्फ हमी को है क्या ? क्या आप को नहीं था क्या ? आपको था, आपने 5 अक्टूबर 2007 यूरिया नीम-कोटिंग की चर्चा आपके Group of Ministers के द्वारा principally approved हुई है, 5 अक्टूबर 2007 से ले करके क्या हुआ? करीब-करीब छह साल! एक आपने cap लगाई 35%, उससे ज्यादा नहीं नीम-कोटिंग करना, आप 100% नहीं करते हैं उसका कोई लाभ ही नहीं होता है क्योंकि यूरिया चोरी होता है कारखानों में चला जाता है किसान के नाम पर subsidy के bill कटते हैं लेकिन किसान को

लाभ नहीं मिलता था। यूरिया का दूसरा दुरुपयोग होता था synthetic-milk बनाने में और उसके कारण गरीब बच्चों की जिंदगी के साथ खेला जाता था। यूरिया को 100% नीम कोटिंग किया आपने निर्णय किया था, छह साल में आपने सिर्फ 20%, 35% cap लगाने के बाद 35% भी नहीं पहुँच पाए, सिर्फ 20%, नीम-कोटिंग किया। हमने आ करके इस बात को हात में लिया और 188 देश, आपका छह साल, मेरा छह महीना हिंदुस्तान में 100% नीम कोटिंग यूरिया कर दिया, imported यूरिया को भी नीम-कोटिंग कर दिया और उस नीम-कोटिंग का लाभ, इसका हमने सर्वे करवाया यानि की आप की कार्य संस्कृति और हमारी कार्य संस्कृति में फर्क इतना है नीम-कोटिंग की बात आती है आप खड़े हो जाते हो कि ये तो हमारे जमाने का है तो ये आप के जमाने को आपके मैदान में मैंने खेलना तय किया है इसलिए मैं खेल करके दिखाता हूँ कि आप का हाल क्या है? नीम कोटिंग का अध्ययन हमने करवाया। Agriculture Development and Rural Transformation Centre उन्होंने तो analysis करके Report दिया है, किसानों का कितना भला हो रहा है देखिए। धान के उत्पादन में 5 प्रतिशत वृद्धि, गन्ने के उत्पादन में 15 प्रतिशत वृद्धि, आप कल्पना कर सकते हैं कि किसानों को इसके कारण कितना खर्चा बच रहा है।

किस प्रकार से आदरणीय राष्ट्रपति जी ने हम सबसे एक आह्वान किया है कि लोक सभा और विधान सभा के चुनाव साथ-साथ होने की दिशा में सोचने का समय आ गया है। इसको राजनीतिक तराजू से न तोला जाए, तत्कालीन हर किसी को थोड़ा बहुत नुकसान होगा हर किसी को थोड़ा बहुत होगा, लेकिन इस विषय पर गंभीरता से सोचन की आवश्यकता है। आज हर वर्ष, पाँच-सात, राज्यों में चुनाव होते ही रहते हैं। एक करोड़ से ज्यादा सरकारी मुलाजिम कभी न कभी चुनावों में लगे रहते हैं। सबसे ज्यादा नुकसान शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए हमारे अध्यापकों प्रध्यापकों को चुनाव के कामों में जाना पड़ता है। भविष्य के पीढ़ियों का नुकसान हो रहा है, बार-बार चुनाव के कारण हो रहा है और उसके कारण खर्च में भी बहुत बड़ी वृद्धि हो रही है। और इसलिए 2009 का जो लोक सभा चुनाव हुआ तो 1100 करोड़ रुपये का खर्च हुआ और 2014 का लोक सभा का चुनाव हुआ 4000 करोड़ से भी ज्यादा का हुआ। आप कल्पना कर सकते हैं इस गरीब देश पर ये गरीब देश पर कितना बोझ पड़ रहा है। आज कानून व्यवस्था की दृष्टि से अनेक नई-नई चुनौतियाँ आ रही हैं। प्राकृतिक संकटों के कारण भी security force की मदद लगती है, दुनिया भर में फैल रहा आतंकवाद और दुश्मन देश जिस प्रकार से हरकते कर रहे हैं हमारी security force को उसमें ताकत लगानी पड़ रही है। इतना बड़ा काम बढ़ता जा रहा है। दूसरी तरफ security forces की ज्यादातर शक्ति चुनावी प्रबंधों में लगानी पड़ रही है उनको भेजना पड़ रहा है। इन संकट को हम समझें और एक दीर्घ दृष्टा के रूप में कोई एक दल इसका निर्णय नहीं कर सकता है। सरकार इसका निर्णय कतई नहीं कर सकती है, लेकिन अनुभव के आधार पर जिम्मेवार लोगों ने मिल करके इस समस्या का समाधान हमने खोजना होगा, हमें रास्ता खोजना होगा और राष्ट्रपति जी ने जो चर्चा निकाली है उस चर्चा को हमने आगे बढ़ाना चाहिए। उनका धन्यवाद करते हुए उनके धन्यवाद के लिए हम लोगों ने प्रयास करना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे देश की ग्रामीण अर्थ-कारण को मजबूत किए बिना देश का अर्थ-कारण आगे नहीं बढ़ता है। मैं हैरान हूँ हमारे विपक्षी नेता को राष्ट्रपति जी के संबोधन में दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, युवा मजदूर इनके उल्लेख से भी परेशानी हुई है क्या इस देश में दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित इन लोगों को इन लोगों का क्या उन लोगों का राष्ट्रपति के भाषण में स्थान नहीं होना चाहिए। उससे पीड़ा होनी चाहिए मैं हैरान हूँ कि ऐसी पीड़ा क्यों होनी चाहिए। हमने कृषि सिंचाई योजना पर बल दिया है क्योंकि मैं मानता हूँ कि अब आप देखिए MGNREGA में कैसा मूलभूत परिवर्तन आया है आपने तीन साल में सिर्फ 600 करोड़ रुपया बढ़ाया था। हमने आ करके दो साल में 11000 करोड़ रुपया बढ़ा दिया है। क्यों हमने उसमें space technology का उपयोग किया है, हमने उसके अंदर zero taking की व्यवस्था की है और हमने बल दिया है बल दिया है कि तालाब तालाब पर बल दिया जाएगा कि सिंचाई चाहिए सबसे बड़ी बात है मत्स्य पालन के लिए भी छोटे-छोटे तालाब चाहिए। गरीब व्यक्ति कता सकता है और उसके कारण करीब 10 लाख से ज्यादा तालाब बनाने का संकल्प ले करके हम चल रहे हैं और पिछले बार भी हमने तालाब की ओर बल दिया था। उसी से हमारे जो किसान हैं उनको एक बहुत बड़ा लाभ होने की संभावना है। monitoring की व्यवस्था है zero taking के कारण monitoring की व्यवस्था है उसका भी लाभ होगा। और space technology सेटेलाइट के अंदर बहुत चीजें होने के कारण भी हम उसका उपयोग नहीं किए हमने सेटेलाइट छोड़ करके अखबारों सुरखियों में जगह बना लिया। ये सरकार है जिसने लगातार भरपूर प्रयास किया है और उसको भी आगे बढ़ाने के लिए काम करें।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना- फसल बीमा पहले भी थी लेकिन फसल बीमा लेने के लिए किसान पहले तैयार नहीं था। फसल बीमा पहले भी थी लेकिन किसान के हकों की रक्षा नहीं होती थी। मैं चाहूँगा हम सब सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले लोग हैं। राजनीतिक दल के सिवाय भी समाज के प्रति हमारी एक जिम्मेवारी है। इस सदन के सभी लोग प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का अध्ययन करें और हमारे इलाके के किसानों को कैसे मदद मिल सकती है इसके लिए

इसका फायदा पहुँचाएं। पहली बार बुआई न हुई हो तो प्राकृतिक आपदा के कारण तो भी वो बीमा का हकदार बना है और फसल काटने के बाद भी अगर 15 दिन के अन्दर-अन्दर कोई और आपदा आयी तो भी वो फसल बीमा का हकदार बने, ये निर्णय छोटा नहीं है और इसलिए ये हम सब का दायित्व बनता है कि हम हमारे किसानों को ये जो लाभ मिला है उस राज्य को हम पहुँचाएं।

Soil Health Card- राजनीतिक मदभेद हो सकता है लेकिन अपने इलाके के किसानों को Soil Health Card समझाइए। उनका फायदा होगा उनकी लागत कम हो जाएगी। सही भूमि पर सही फसल से उपयुक्त लाभ होगा। ये सीधा-सीधा विज्ञान है, उसमें राजनीति करने की कोई जरूरत नहीं है। इसको हमें आगे बढ़ाना चाहिए और उसमें मैं तो चाहूँगा छोटे-छोटे Entrepreneur आगे आएँ खुद अपनी Private Lab बनाएं और वे खुद Certify Labs के द्वारा धीरे-धीरे गाँवों में भी एक नए रोजगार का क्षेत्र भी खुले उस दिशा में हमें काम करना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, हमने और भी अनेक विषयों यहाँ पर युवाओं के लिए चर्चा हुई रोजगार के अवसर। मुद्रा योजना से करीब-करीब दो करोड़ से ज्यादा लोगों को बिना कोई गारंटी जो धन दिया गया है या तो वह खुद अपने पैरों पर खड़ा हुआ है या पहले से था तो ये एक से अधिक व्यक्ति को रोजगार देने की ताकत आयी है। हम लोग, हम लोगों की यही सोच रही, जब तक हम देश में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ाएँ हमारी नीतियाँ वो होनी चाहिए कि हर जगह पर उसके रोजगार की संभावना बढ़े और हमने उस नीति को अपनाया, Skill Development पर बल दिया है और उसका लाभ है कि हमारे यहाँ कृषि क्षेत्र...ये प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना ये प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जब लागू कर रहे हैं तो उस काम में लोगों को रोजगार मिलेगा की नहीं मिलेगा? हम लोगों को ऊर्जा गंगा योजना के साथ पूर्वी भारत को गैस पाइप लाइन से जोड़ने का एक बड़ा अभियान चलाया है। सैकड़ों किलोमीटर का गैस पाइप लाइन लगने वाला है क्या उसमें नौ जवानों के रोजगार की संभावना पड़ी है की नहीं पड़ी है?

और इसलिए विकास का वह दिशा हो जिसमें नौजवानों को रोजगार मिले हमने अभी Textile में, जूतों के क्षेत्र में अनेक Initiative लिए हैं, जिसके कारण अनेक लोगों को नये रोजगार और नये-नये क्षेत्रों में रोजगार की संभावना हुई है। देश के छोटे उद्योगों को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है, इस बजट में भी बहुत महत्वपूर्ण फैसले किए हैं और छोटे-छोटे उद्योगों को जितना बल मिलेगा उसके कारण हमारे देश में रोजगार की संभावनाएं बढ़ेगी।

'Zero Defect Zero Effect' ये हमारे Production का criteria रखें तो हम दुनिया के Market को भी capture कर सकते हैं और हमारे छोटे उद्योग-कारों की export करने की ताकत होती है बड़े-बड़े उद्योग-कारों को छोटे-छोटे पूरजे लगते हैं वो छोटे-छोटे कारखानों से मिलते हैं और बहुत बड़ा Engineering की दुनिया में हम miracle कर सकते हैं। और इसलिए सरकार ने और अभी बजट में जो योजना लाए हैं, नए बजट में उसका लाभ 96% उद्योगकारों को मिलने वाला है, 96%, 4% जो बड़े लोग हैं वो बाहर रह गये, लेकिन 50 करोड़ से कम वाले करीब 96% हैं उन सबको फायदा मिल रहा है और बहुत बड़ा फायदा मिल रहा है। उसके कारण रोजगार के लिए बहुत बड़ी संभावनाएं बढ़ने वाली है।

Surgical Strike- मैं हैरान हूँ अपने सीने पर हाथ रख करके पूछिए Surgical Strike के पहले 24 घंटे राजनेताओं ने कैसे-कैसे बयान दिए थे, कैसी भाषा का प्रयोग किया था लेकिन जब देखा कि देश का मिज़ाज अलग है, उनको अपनी भाषा बदलनी पड़ी और मैं आज आपसे आग्रह करता हूँ, ये बहुत बड़ा निर्णय था और उस निर्णय को कोई मुझे पूछता नहीं है, नोटबंदी में तो पूछता है कि मोदी जी secret क्यों रखा? Cabinet को क्यों नहीं बताया! ऐसा पूछते हैं। Cabinet को भी नहीं बताया! Surgical Strike के संबंध में कोई नहीं पूछ रहा है। भाइयों और बहनों! हमारे देश की सेना का, हमारे देश की सेना उसके जितने गुणगान करें, हमारे देश की सेना का जितना गुणगान करें उतना ही कम है और इतने बड़े फलक में इतनी सफल Surgical Strike की है surgical strike आपको परेशान कर रही है मैं जानता हूँ। Surgical Strike आप को परेशान कर रही है और इसलिए Surgical Strike आप की मुसीबत ये है कि Public में जाकर बोल नहीं पाते हो अंदर पीड़ा अनुभव कर रहे हो, ये आप की मुसीबत है। लेकिन आप मान के चलिए ये देश ये देश, हमारी सेना इस राष्ट्र की रक्षा के लिए पूरी सामर्थ्यवान है पूरी शक्तिवान है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मुझे विश्वास है कि हम इस सदन में संवाद हो नए-नए शोध हो, नए-नए विचारों को रखा जाए क्योंकि हम लोग तो ज्ञान के पुजारी हैं विचारों को स्वागत करने वाले लोग हैं, जितने नए विचार मिलेंगे किसी भी दिशा में से विचार आएँ जरूरी नहीं की विचार इसी दिशा में आएँ, इसी दिशा में विचार आएँ उत्तम विचारों का स्वागत है क्योंकि हमने सब मिल करके ultimately हम सब का उद्देश्य है हमारे देश को आगे बढ़ाना, ultimately हम सब का

उद्देश्य है देश को बुराइयों से मुक्त कराना, ultimately हमारा उद्देश्य है इस देश को नयी ऊँचाइयों पर ले जाना। और विश्व के अंदर एक अवसर आया है ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं। आज की जो विश्व की व्यवस्था है उसमें भारत के लिए एक अवसर आया है इस अवसर का अगर हम फायदा उठाएं और एक स्वर से एक ताकत के साथ हम दुनिया के सामने प्रस्तुत होंगे। मुझे विश्वास है विश्व में भी जो सपना देख करके हमारे पूर्वज चले थे उसको हम पूरा कर सकते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे समय दिया सदन ने मुझे सुना इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ और मैं फिर एक बार आदरणीय राष्ट्रपति जी को हृदय से अभिनंदन करते हुए मेरी बात को विराम देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद!

अतुल तिवारी/ अमित कुमार / तारा / सोनिका / प्रजापति

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

30-जून-2017 23:59 IST

संसद के सेंट्रल हॉल में माल और सेवा कर के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आदरणीय राष्ट्रपति जी, आदरणीय उपराष्ट्रपति जी, लोकसभा की अध्यक्ष जी, पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय देवगौड़ा जी, मंत्रिपरिषद् के मेरे साथी, सदन के सभी सम्मानित सदस्यगण, और विविध क्षेत्र से पधारे हुए सभी वरिष्ठ महानुभाव,

राष्ट्र के निर्माण में कुछ ऐसे पल आते हैं जिस पल पर हम किसी नए मोड़ पर जाते हैं, नए मुकाम की ओर पहुंचने का प्रयास करते हैं। आज इस मध्य रात्रि के समय हम सब मिल करके देश का आगे का मार्ग सुनिश्चित करने जा रहे हैं।

कुछ देर बाद, देश एक नई व्यवस्था की ओर चल पड़ेगा। सवा सौ करोड़ देशवासी इस ऐतिहासिक घटना के साक्षी हैं। GST की ये प्रक्रिया, ये सिर्फ अर्थव्यवस्था के दायरे तक सीमित है, ऐसा मैं नहीं मानता। पिछले कई वर्षों से अलग-अलग महानुभावों के मार्गदर्शन में, नेतृत्व में, अलग-अलग टीमों के द्वारा जो प्रक्रियाएं चली हैं, वो एक प्रकार से भारत के लोकतंत्र की भारत की, संघीय ढांचे की, Co-operative Federalism के हमारे concept की एक बहुत बड़ी मिसाल के रूप में आज ये अवसर हमारा आया है। इस पवित्र अवसर पर आप सब अपना बहुमूल्य समय निकाल करके आए हैं, मैं हृदय से आपका स्वागत करता हूं, आपका आभार व्यक्त करता हूं।

ये जो दिशा हम सबने निर्धारित की है, जो रास्ता हमने चुना है, जिस व्यवस्था को हमने विकसित किया है; यह किसी एक दल की सिद्धि नहीं है, यह किसी एक सरकार की सिद्धि नहीं है, ये हम सबकी सांझी विरासत है, हम सबके सांझे प्रयासों का परिणाम है। और रात्रि को 12 बजे इस Central Hall में हम एकत्र आए हैं। ये वो जगह है जिस जगह पे इस राष्ट्र के अनेक महापुरुषों के पद-चिन्हों से, इस जगह ने अपने-आपको पावन किया हुआ है; ऐसी पवित्र जगह पर हम बैठे हैं। और इसलिए आज Central Hall, इस घटना के साथ हम याद करते हैं, 9 दिसम्बर, 1946, संविधान सभा की पहली बैठक का ये सभागृह साक्षी है। हम उस स्थान पर बैठे हैं, जब संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई। पंडित जवाहलाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबा साहेब अम्बेडकर, आचार्य कृपलानी, डॉक्टर राजेन्द्र बाबू, सरोजनी नायडू, ये सब महापुरुष पहली कतार में बैठे हुए थे।

उस सदन में जहां कभी 14 अगस्त, 1947, रात को 12 बजे, देश की स्वतंत्रता की उस पवित्र महान घटना; ये स्थान उनका साक्ष्य है।

26 नवम्बर, 1949 देश ने संविधान को स्वीकार किया। यही जगह उस महान घटना का भी साक्षी के रूप में है। और आज वर्षों के बाद एक नई अर्थव्यवस्था के लिए, संघीय ढांचे की एक नई ताकत के लिए GST के रूप में इसी पवित्र स्थान से बढ़ करके मैं समझता हूं कोई और स्थान नहीं हो सकता है, इस काम के लिए।

संविधान का मंथन 2 साल, 11 महीने और 17 दिन तक चला था। हिन्दुस्तान के कोने-कोने से विद्वतजन उस बहस में हिस्सा लेते थे, वाद-विवाद होते थे, राजी-नाराजी होती थी, सब मिल करके बहस करते थे, रास्ते खोजते थे। कभी इस पार, कभी उस पार नहीं जा पाए तो बीच का रास्ता खोज करके चलने का प्रयास करते थे; ठीक उसी तरह ये GST भी एक लम्बी विचार-प्रक्रिया का परिणाम है। सभी राज्यों समान रूप से, केन्द्र सरकार उसी की बराबरी में, और सालों तक चर्चा की है। संसद में इसके पूर्व के भी सांसदों ने, उसके पूर्व के सांसदों ने लगातार इस पर बहस की है। एक प्रकार से best brains of the country, उन्होंने लगातार इस काम को किया है, और उसी का परिणाम है कि आज ये GST को हम साकार रूप में देख सकते हैं।

जब संविधान बना, तो संविधान ने पूरे देश के नागरिकों को समान अवसर, समान अधिकार, उसके लिए सुनिश्चित व्यवस्था खड़ी कर दी थी। और आज GST एक प्रकार से सभी राज्यों के मोतियों को एक धागे में पिरोने का और आर्थिक व्यवस्था के अंदर एक सुचारु व्यवस्था लाने का एक अहम प्रयास है। GST एक Co-operative Federalism की एक मिसाल है, जो हमें हमेशा-हमेशा और अधिक साथ मिलकर चलने की ताकत देगी। GST, ये 'टीम इंडिया' का क्या परिणाम हो सकता है, इस 'टीम इंडिया' की कर्तव्य शक्ति का, सामर्थ्य का परिचायक है।

ये GST Council केंद्र और राज्य में मिल करके उन व्यवस्थाओं को विकसित किया है, जिसमें गरीबों के लिए जो पहले उपलब्ध सेवाएं थीं, उन सारी सेवाओं को बरकरार रखा है। दल कोई भी हो, सरकार कहीं की भी हो; गरीबों के प्रति संवेदनशीलता इस GST के साथ जुड़े हुए सब लोगों ने समान रूप से उसकी चिंता की है। मैं GST Council को बधाई देता हूँ, अब तक इस काम का नेतृत्व जिन-जिन लोगों ने किया है, अरुण जी ने विस्तार से कहा था, मैं उसका, मैं उसका

पुनरावर्तन नहीं करता हूं। मैं उन सबको भी बढ़ाई देता हूं, इस प्रक्रिया को जिन-जिन लोगों ने आगे बढ़ाया, उन सबको मैं बढ़ाई देता हूं।

आज GST Council की 18वीं मीटिंग हुई और थोड़ी देर के बाद GST लागू होगा। ये भी संजोग है कि गीता के भी 18 अध्याय थे और GST Council की भी 18 मीटिंगें हुई और आज हम उस सफलता के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। एक लंबी प्रक्रिया थी, परिश्रम थी, शंकाएं, आशंकाएं थी, राज्यों के मन में गहरे सवाल थे। लेकिन अथाह पुरुषार्थ, परिश्रम, दिमाग की जितनी भी शक्ति उपयोग में लाई जा सकती है ला कर के इस कार्य को पार किया है। चाणक्य ने कहा था

**यद दुरं यद दुराद्यम्, यद च दुरै, व्यवस्थितम्,
तत् सर्वम् तपसा साध्यम् तपोहिदुर्तिक्रमम्।**

चाणक्य के इस वाक्य ने हमारी पूरी GST प्रक्रिया को बड़े ही अच्छे ढंग से कहा है। कोई वस्तु कितनी ही दूर क्यों न हो, उसका मिलना कितना ही कठिन क्यों न हो, वो पहुंच से कितनी ही बाहर क्यों न हो, कठिन तपस्या और परिश्रम से उसे भी प्राप्त किया जा सकता है और यह आज हुआ है।

हम कल्पना करें कि देश आज़ाद हुआ, 500 से ज्यादा रियासतें थीं। अगर सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इन रियासतों को मिलाकर के देश को एक न किया होता, देश का एकीकरण न किया होता तो भारत का राजनीतिक मानचित्र कैसा होता? कैसा बिखराव होता! आजादी होती लेकिन देश का वो मानचित्र कैसा होता? जिस प्रकार से सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों को मिला करके एक राष्ट्रीय एकीकरण का बहुत बड़ा काम किया था, आज GST के द्वारा आर्थिक एकीकरण का एक महत्वपूर्ण काम हो रहा है। 29 राज्य, 7 केन्द्र शासित प्रदेश, केन्द्र के 7 Tax, राज्यों के 8 Tax और हर चीजों के अलग-अलग Tax का हिसाब लगाएं, तो 500 प्रकार के Tax कहीं न कहीं अपना Role Play कर रहे थे। आज उन सबसे मुक्ति पाकर के, अब गंगानगर से ले करके ईटानगर तक, लेह से ले करके लक्षद्वीप तक One Nation-One Tax, यह सपना हमारा साकार होकर रहेगा।

और जब इतने सारे Tax, 500, अलग-अलग हिसाब लगाएं 500 Tax। अलबर्ट आइंस्टीन प्रखर वैज्ञानिक उन्होंने एक बार बड़ी मज़ेदार बात कही थी। उन्होंने कहा था कि दुनिया में अगर कोई चीज समझना सबसे ज्यादा मुश्किल है तो वो है Income Tax, यह अलबर्ट आइंस्टीन ने कहा था। मैं सोच रहा था अगर वो यहां होते तो पता नहीं ये सारे Tax देखकर के क्या कहते, क्या सोचते? और इसलिए, और हमने देखा है कि उत्पाद के अंदर के उत्पादन में तो ज्यादा कोई बहुत असमानता नहीं आती है, लेकिन जब Product बाहर जाता है तो राज्यों के अलग-अलग Tax के कारण असमानता दिखती है। एक ही चीज दिल्ली में एक दाम होगा, 25-30 किलोमीटर गुरुग्राम में दूसरा charge लगेगा और उधर नौएड़ा में गए तो तीसरा होगा। क्यों, क्योंकि हरियाणा का Tax अलग, उत्तरप्रदेश का Tax अलग, दिल्ली का अलग। इन सारी विविधताओं के कारण सामान्य नागरिक के मन में सवाल उठता था कि मैं गुरुग्राम में जाता हूं तो यही चीज मुझे इतने में मिल जाती है, वही चीज नौएड़ा में जाऊं तो इतने में मिलती है और दिल्ली में जाता हूं तो इतने में मिलती है। एक प्रकार से हर किसी के लिए Confusion की स्थिति रहती थी। अब पूंजी निवेश में भी विदेशों के लोगों के लिए यह सवाल रहता था कि भई किस, एक व्यवस्था हम समझते हैं और काम कहीं सोचते हैं, तो दूसरे राज्य में दूसरी व्यवस्था सामने आती है और एक Confusion का माहौल बना रहता था, आज उससे मुक्ति की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं।

अरुण जी ने बड़ा विस्तार से वर्णन किया है कि GST के कारण Octroi की व्यवस्था हो, Entry Tax हो, Sale Tax हो, VAT हो, न जाने कितनी चीजें, सारा वर्णन उन्होंने विस्तार से किया सब खत्म हो जाएगा। हम जानते हैं कि हम Entry के टोल पर घंटों तक हमारे Vehicle खड़े रहते हैं। देश का अरबों खरबों का नुकसान होता है। Fuel के जलने के कारण पर्यावरण का भी उतना ही नुकसान होता है। इस सारी व्यवस्था Similar होने के कारण, एक प्रकार से उन सारी अव्यवस्थाओं में से एक मुक्ति का मार्ग हमें प्राप्त होगा।

कभी-कभार Perishable Goods खास करके समय पर पहुंचना बहुत आवश्यक होता था, लेकिन वो जब नहीं पहुंचता था तो उसके कारण उस पहुंचाने वाले का भी नुकसान होता था और जो Processing करता था उसका भी नुकसान होता था। इन सारी जो व्यवहार जीवन की अव्यवस्थाएं थी, उन अव्यवस्थाओं से आज हम मुक्ति पा रहे हैं और हम आगे बढ़ रहे हैं।

GST के तौर पर देश एक आधुनिक Taxation System की ओर आज कदम रख रहा है, बढ़ रहा है। एक ऐसी व्यवस्था

हैं जो ज्यादा सरल है, ज्यादा पारदर्शी है; एक ऐसी व्यवस्था है जो जो काले धन को और भ्रष्टाचार को रोकने में एक अवसर प्रदान करती है; एक ऐसी व्यवस्था है जो ईमानदारी को अवसर देती है, जो ईमानदारी से व्यापार करने के लिए एक उमंग, उत्साह करने की व्यवस्था इससे मिलती है; एक ऐसी व्यवस्था है जो नए Governance के Culture को भी ले करके आती है और जिसके द्वारा GST हम लेकर आए हैं।

साथियों,

Tax Terrorism और Inspector राज, ये बात कोई नई नहीं है। सबदूर ये शब्द हम सुनते आए हैं, परेशानी भुगतने वालों से हमने उस चिंता को अनुभव किया है और GST की इस व्यवस्था के कारण Technologically के लिए सारा Trail होने के कारण, अब अफसरशाही, सब उसके लिए Grey Area बिल्कुल समाप्त हो रहा है। उसके कारण जो सामान्य व्यापारियों को, सामान्य कारोबारियों को अफसरों के द्वारा जो परेशानियां होती रही हैं, उससे मुक्ति का मार्ग इस GST के द्वारा; कोई ईमानदार व्यापारी बेवजह परेशान हो वो दिन इसके साथ खत्म होने की पूरी संभावना इस GST के अंदर है। इस पूरी व्यवस्था में, छोटे व्यापारियों को 20 लाख तक का व्यापार करने वालों को पूरी तरह मुक्ति दे दी गई है। और जो 75 लाख तक हैं, उनको भी कम से कम इस चीजों से जुड़ना पड़े इसकी व्यवस्था की है। ये बात ठीक है कि structure में लाने के लिए कुछ व्यवस्थाएं की हैं लेकिन वो minimum व्यवस्थाएं, नाममात्र की व्यवस्थाएं की गई हैं और उसके कारण सामान्य मानवी जो है, उसके लिए इस नई व्यवस्था से कोई बोझ होने वाला नहीं है।

साथियों,

GST की व्यवस्था, ये बड़ी-बड़ी आर्थिक भाषा में जो बोला जाता है; वहां तक सीमित नहीं है। बड़े-बड़े शब्द इसके साथ जोड़े जाते हैं, लेकिन अगर सरल भाषा में कहो कि देश के गरीबों के हित के लिए ये व्यवस्था सबसे ज्यादा सार्थक होने वाली है। आजादी के 70 साल के बाद भी हम गरीबों तक जो पहुंचा नहीं पाए हैं, ऐसा नहीं कि प्रयत्न नहीं हुए हैं। सब सरकारों ने प्रयत्न किए हैं। लेकिन संसाधनों की मर्यादा रही है कि हम हमारे देश के गरीब की उन आवश्यकताओं की पूर्ति में कहीं न कहीं कम पड़े हैं।

अगर हम संसाधनों को सुव्यस्थित ढंग से और बोझ किसी एक पर न जाएं, बोझ sparred हो जाएं, Horizontal जितना हम sparred करें, उतना ही देश को Vertical ले जाने की सुविधा बढ़ती है। और इसलिए उस दिशा में जाने का काम, अब वो कच्चा बिल, पक्का बिल, ये सारे खेल खत्म हो जाएंगे, बड़ी सरलता हो जाएगी। और मुझे विश्वास है छोटे-मोटे व्यापारी भी, ये जो गरीब को benefit मिलने वाला है, वो जरूर उसको transfer करेंगे, ताकि गरीब का भला, हम लोगों का आगे बढ़ाने के लिए बहुत-बहुत काम आने वाला है।

कभी-कभी आशंकाएं होती हैं कि ये नहीं होगा, ठिकना नहीं होगा, फलाना नहीं होगा और हमारे देश में हम जानते हैं कि जब XIth और XIIth के रिजल्ट online देने की शुरुआत की और एक साथ सब गए जब, तो सारा hang-up हो गया और दूसरे दिन खबर यही बन गई कि ऐसा हो गया। आज भी काफी ऐसी ही चर्चा होती है।

ये बात ठीक है कि हर किसी को technology नहीं आती है। लेकिन हर परिवार में दसवीं, बारहवीं का अगर विद्यार्थी है, तो उसको ये सारी चीजें आती हैं। कोई मुश्किल काम नहीं, इतना सरल है, घर में 10वीं, 12वीं का विद्यार्थी भी रहता है, वो चीजें छोटे से व्यापारी को भी और वो मदद कर सकता है, एक रास्ता निकल सकता है।

जो लोग आशंकाएं करते हैं, मैं कहता हूँ कृपा करके ऐसा मत कीजिए। अरे आपका पुराना डॉक्टर हो, आप उसी से अपनी आंखें लगातार check करवाते हो। वो ही हर बार आपके नंबर निकालता हो, आपका चश्मा बनाने वाला भी निश्चित हो, आप वहां अपने नंबर बनवाते हो, और फिर भी जब नया नंबर वाला चश्मा आता है तो एकाध-दो दिन तो आंख ऊपर-नीचे करके adjust करना पड़ता है; ये बस इतना ही है। और इसलिए थोड़ा सा हम प्रयास करेंगे इस व्यवस्था के साथ हम आसानी से जुड़ जाएंगे। और इसलिए थोड़ा सा अगर हम प्रयास करेंगे तो इस व्यवस्था से हम आसानी से जुड़ जाएंगे। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि अफवाहों के बाजार को बंद करें और अब, जब देश चल पड़ा है तो सफल कैसे हो, देश के गरीब-जनों की भलाई के लिए कैसे काम हो, उस पर हम ले करके चलें और तब जा करके कम होगा।

GST के इस निर्णय का, वैश्विक economic world में एक बहुत सकारात्मक प्रभाव हुआ है। भारत में जो पूंजी निवेश करना चाहते हैं उनके लिए भी एक प्रकार की व्यवस्था बहुत आसानी से वो समझ पाते हैं और उसको चला पाते हैं। मैं समझता हूं भारत में और आज दुनिया का एक प्रिय destination के रूप में; निवेश के लिए प्रिय destination के रूप में भारत को हर प्रकार से स्वीकृति मिली है और इसके लिए मैं समझता हूं कि एक अच्छी सुविधा विश्व-व्यापार से जुड़े हुए लोगों को भी भारत के साथ व्यापार करने के लिए मिलेगी।

GST एक ऐसा catalyst है जो देश के व्यापार को, उसमें जो असंतुलन है, उस असंतुलन को खत्म करेगा। GST एक ऐसा catalyst है जिससे Export Promotion को भी बहुत बल मिलेगा। और GST एक वो व्यवस्था है, जिसके कारण आज हिन्दुस्तान में जो राज्य ठीक से विकसित हुए हैं, उनको विकास के अवसर तुरंत मिलते हैं। लेकिन जो राज्य पीछे रह गए हैं, उनको वो अवसर तलाशने में बहुत दम घोटना पड़ता है। उन राज्यों का कोई दोष नहीं है। प्राकृतिक संपदा से समृद्ध हैं, हमारा बिहार देखें, हमारा पूर्वी उत्तर प्रदेश देखें, हमारा पश्चिम बंगाल देखें, हमारे North-East के देखें, हमारा उड़ीसा देखें, संसाधन, प्राकृतिक संसाधनों से भरे पड़े हैं। लेकिन अगर उनको ये, ये व्यवस्था, जब एक कानून की व्यवस्था मिल जाएगी, मैं साफ देख रहा हूं कि हिन्दुस्तान का पूर्वी हिस्सा के विकास में मैं जो कुछ भी कमी रह गई है, उसको पूरा करने का सबसे बड़ा अवसर, सबसे बड़ा अवसर इससे मिलने वाला है। हिन्दुस्तान के सभी राज्यों को विकास के समान अवसर प्राप्त होना, ये अपने-आप में विकास की राह पर आगे बढ़ने का एक बहुत बड़ा अवसर है।

GST, एक प्रकार से जैसे हमारी Railway है। रेलवे-केंद्र और राज्य मिल करके चलाते हैं, फिर भी भारतीय रेल के रूप में हम देखते हैं। राज्य के अंदर स्थानीय रूप से मदद मिलती है, एक समान रूप से हम देखते हैं। हमारे Central Service के अधिकारी केंद्र और राज्यों में वितरित हैं, फिर भी दोनों तरफ से मिल करके चला सकते हैं। एक GST ऐसी व्यवस्था है कि जिसमें पहली बार केंद्र और राज्य के लोग मिल करके निश्चित दिशा में काम करने वाले हैं। ये अपने-आप में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लिए एक उत्तम से उत्तम व्यवस्था आज हो रही है, और जिसका प्रभाव आने वाले दिनों में, आने वाली पीढ़ियां हमें गर्व के साथ स्वीकार करेंगी।

2022, भारत की आजादी के 75 साल हो रहे हैं। 'New India' का सपना ले करके हम चल पड़े हैं। सवा सौ करोड़ देशवासी 'New India' बनाने के सपनों को ले करके चल रहे हैं। और इसलिए भाइयों, बहनों, GST एक अहम भूमिका अदा करेगी और हम लोगों ने जिस प्रकार से प्रयास किया है। लोकमान्य तिलक जी ने जो गीता रहस्य लिखा है, उस गीता रहस्य के समापन में उन्होंने वेद का एक मंत्र भी उसमें समाहित किया है। उस वेद का मंत्र आज भी हम लोगों के लिए प्रेरणा देने वाला है। और लोकमान्य तिलक जी ने कहा है- उसका उल्लेख किया हुआ है- मूलतः ऋग्वेद का श्लोक है-

**सवाणिवाहः आकृतिः समाना रुदयनिवाहः
समान वस्तु वो मनो यथावा सुसहासिति**

आप लोगों का संकल्प, निश्चय और भाव-अभिप्राय एक समान रहे, आप लोगों के हृदय एक समान हों, जिससे आप लोगों का परस्पर कार्य सर्वत्र एक साथ भली प्रकार से हो सके। इस भाव से लोकमान्य तिलक जी ने भी हमें आज परिणाम दिया है।

GST 'New India' की एक Tax व्यवस्था है। GST 'Digital भारत' की Tax व्यवस्था है।

GST सिर्फ 'Ease of doing Business' नहीं है, GST 'Way of Doing Business' की भी एक दिशा दे रहा है। GST सिर्फ एक Tax Reform नहीं है, लेकिन वो आर्थिक Reform का भी एक अहम कदम है। GST आर्थिक Reform से भी आगे एक सामाजिक Reform का भी एक नया तबका, जो एक ईमानदारी के उत्सव की ओर ले जाने वाला ये बन रहा है। कानून की भाषा में GST-Goods and Service Tax के रूप में भी जाना जाता है। लेकिन GST से जो लाभ मिलने वाले हैं और इसलिए मैं कहूंगा कि कानून भले ही कहता हो कि Goods and Service Tax, लेकिन हकीकत में ये Good and Simple Tax है और Good इसलिए कि Tax पर Tax, Tax पर Tax जो लगते थे, उससे मुक्ति मिल गई। Simple इसलिए है कि पूरे देश में एक ही Form होगा, एक ही व्यवस्था होगी और उसी व्यवस्था से चलने वाला है और इसलिए उसे हमें आगे बढ़ाना है।

मैं आज इस अवसर पर आदरणीय राष्ट्रपति जी ने समय निकालकर के, क्योंकि इस सारी यात्रा के वे भी एक साथी रहे हैं, सहयात्री रहे हैं; इसके हर पहलु को उन्होंने भली-भांति देखा है, जाना है, प्रयास किया है। उनका मार्गदर्शन इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घड़ी में हम सबके लिए एक बहुत बड़ी प्रेरणा का कारण बनेगा। नया उमंग और उत्साह मिलेगा और उसको ले करके हम आगे चलेंगे।

मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी से... मैं उनका बहुत आभारी हूँ कि वो आज आएँ हम सबका मार्गदर्शन करने के लिए और उनकी बातें हम सबको एक नई प्रेरणा देती रहेगी। इसी एक भाव के साथ मैं फिर एक बार इस प्रयत्न के साथ जुड़े हुए हर किसी का आभार व्यक्त करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूँ और श्रद्धेय राष्ट्रपति जी से आग्रह करता हूँ कि वो हमारा मार्ग दर्शन करें।

अतुल तिवारी/ विद्या भूषण अरोड़ा/ अमित कुमार/ निर्मल शर्मा/ अमित

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

17-जुलाई-2017 10:41 IST

संसद के मानसून सत्र से पूर्व प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

नमस्कार दोस्तों,

आज मानसून सत्र का प्रारंभ हो रहा है। गर्मी के बाद, पहली वर्षा एक नई सुगंध मिट्टी में भर देती है, वैसे यह मानसून सत्र जीएसटी की सफल वर्षा के कारण, पूरा सत्र नई सुगंध और नई उमंग से भरा हुआ होगा। जब देश के सभी राजनीतिक दल, सभी सरकारें सिर्फ और सिर्फ राष्ट्रहित के तराजू पर तोल करके निर्णय करती हैं, तो कितना महत्वपूर्ण राष्ट्रहित का काम होता है, वो जीएसटी में सफल और सिद्ध हो चुका है। 'Growing Stronger Together' यह जीएसटी spirit का दूसरा नाम है। यह सत्र भी उस जीएसटी spirit के साथ आगे बढ़े।

यह सत्र अनेक रूप से महत्वपूर्ण है। 15 अगस्त को आजादी के सात दशक यात्रा पूर्ण कर रहे हैं। 09 अगस्त को सत्र के दरम्यान ही अगस्त क्रांति के 75 साल हो रहे हैं। 'Quit India' Movement के 75 साल का यह अवसर है। यही सत्र है जब देश को नये राष्ट्रपति और नये उपराष्ट्रपति चुनने का अवसर मिला है। एक प्रकार से राष्ट्र जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं से भरा हुआ यह कालखंड है। और इसलिए स्वाभाविक है कि देशवासियों का ध्यान हमेशा की तरह इस मानसून सत्र पर विशेष रहेगा।

जब हम मानसून सत्र का प्रारंभ कर रहे हैं तो उस प्रारंभ में, हम देश के उन किसानों को नमन करते हैं जो इस ऋतु में कठोर परिश्रम करके देशवासियों के खाद्य सुरक्षा का इंतजाम करते हैं और उन्हीं को नमन करते हुए यह सत्र का प्रारंभ होता है।

इस मानसून सत्र में मुझे विश्वास है कि सभी राजनीतिक दल, सभी मान्य सांसद गण राष्ट्रहित के महत्वपूर्ण फैसले ले करके, उत्तम स्तर की चर्चा करके, हर विचार में value-addition करने का प्रयास, हर व्यवस्था में value-addition का प्रयास हम सब मिल करके करेंगे, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद!

AKT/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

11-अगस्त-2017 12:55 IST

राज्यसभा में उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू के स्वागत के अवसर पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूलपाठ

आदरणीय सभापति जी, सदन की तरफ से, देशवासियों की तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई और बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

आज 11 अगस्त इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण तारीख से जुड़ा हुआ है। आज ही के दिन 18 साल की एक छोटी उम्र वाले खुदीराम बोस को फाँसी के तख्त पर चढ़ा दिया गया था। देश की आज़ादी के लिए संघर्ष कैसा हुआ, बलिदान कितने हुए और उसके परिप्रेक्ष्य में हम सबका दायित्व कितना बढ़ा है, इसका यह घटना स्मरण कराती है।

हम सबका इस बात की ओर ध्यान जरूर जाएगा कि आदरणीय श्री वेंकैया नायडू जी देश के पहले ऐसे उपराष्ट्रपति बने हैं, जो स्वतंत्र भारत में जन्म लिया है। श्रीमान वेंकैया जी यह ऐसे पहले उपराष्ट्रपति बने हैं, मैं समझता हूँ शायद वो अकेले ऐसे हैं, जो इतने सालों तक इसी परिसर में, इन्हीं सबके बीच में पले हैं, बढ़े हैं शायद इस देश को पहले ऐसे उपराष्ट्रपति मिले हैं, जो इस सदन की हर बारीकी से परिचित हैं। सदस्यों से ले करके समितियों से, समितियों से ले करके सदन तक की कार्यवाही से, स्वयं उस प्रक्रिया से निकले हुए यह पहले उपराष्ट्रपति देश को प्राप्त हो रहे हैं।

सार्वजनिक जीवन में जे. पी. आंदोलन की वो पैदाइश है। विद्यार्थी काल में जयप्रकाश नारायण के आह्वान को ले करके, शुचिता को ले करके, सुशासन के लिए जो राष्ट्रव्यापी आंदोलन चला, आंध्रप्रदेश में एक विद्यार्थी नेता के रूप में उन्होंने अपने आप को झोंक दिया था। और तब से ले करके विधानसभा या राज्यसभा हो, उन्होंने अपने व्यक्तित्व का भी विकास किया और कार्यक्षेत्र का भी विस्तार किया। और आज उसकी बदौलत हम सबने उनको पसंद किया और इस पद के लिए एक गौरवपूर्ण जिम्मेदारी उनको दी।

वेंकैया जी किसान के बेटे हैं। कई वर्षों तक मुझे उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य मिला है। गांव हो, गरीब हो, किसान हो इन विषयों पर वो बहुत ही बारीकी से अध्ययन करते हुए, हर समय अपने Input देते रहे हैं। कैबिनेट में भी वो Urban Development Minister थे। लेकिन मुझे हमेशा ऐसा लगता था कैबिनेट के अंदर चर्चाओं में वो जितना समय Urban विषयों पर कैबिनेट में बात करते थे, उससे ज्यादा रुचि से वो rural और किसान के विषयों पर चर्चा करते थे। यह उनके dear to heart यह उनका रहा, और शायद उनके बचपन का उनके पारिवारिक background के कारण है।

वेंकैया जी उपराष्ट्रपति पद पर बैठे हैं तब, पूरी दुनिया को इस बात पर हमें परिचित करना होगा और मैं मानता हूँ हम सबका दायित्व है, राजनीतिक दीवारों से परे भी यह दायित्व है। और वो दायित्व यह है कि भारत का लोकतंत्र कितना mature है। भारत के संविधान की बारिकियों की कितनी बड़ी ताकत है। हमारे उन महापुरुषों ने जो संविधान दिया उस संविधान का सामर्थ्य क्या है कि आज हिंदुस्तान के संविधान पदों पर वो लोग बैठे हैं, जिनकी पार्श्वभूमि गरीबी की है, गांव की है, सामान्य परिवार से है, वो किसी रहींसी खानदान से नहीं आए। पहली बार देश के सभी सर्वोच्च पदों पर इस पार्श्व भूमि के व्यक्तियों का होना यह अपने आप में भारत के संविधान की गरिमा और भारत के लोकतंत्र की maturity को प्रदर्शित करता है और जिसका गर्व हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ देशवासियों का गर्व है। हमारे पूर्वजों ने हमें जो विरासत दी है, उन पूर्वजों का सम्मान इस घटना के साथ मैं देख रहा हूँ। मैं फिर से एक बार उन संविधान निर्माताओं का भी नमन करना चाहूंगा।

वैक्या जी, उनका व्यक्तित्व भी है, कृतित्व भी है, वक्तुत्व भी है। इन सबके वो धनी हैं और उनकी तुकबंदी तो भलीभांति परिचित है। और कभी-कभी वो जब भाषण करते हैं तो और वो जब तेलगू में करते हैं तो ऐसा लगता है कि Super-fast चला रहे हैं। लेकिन उसके लिए यह तब संभव होता है, जब विचारों के अंदर स्पष्टता हो, Audience के साथ connect हो वो शब्दों का खेल नहीं होता है, जो वक्तुत्व की दुनिया के साथ जुड़े हैं उनका पता है शब्दों के खेल किसी के मन मंदिर को नहीं छू सकते हैं। लेकिन श्रद्धाभाव से पनपी हुई विचारधाराओं के आधार पर अपने conviction और vision के साथ चीजें निकलती हैं तो जन हृदय को अपने आप स्पर्श कर देती हैं और वो वैक्या के जीवन में यह देखा गया है, पाया गया है।

यह भी सही है, ग्रामीण विकास के अंदर आज कोई भी ऐसा सांसद नहीं है, जो एक विषय पर सरकार से बार-बार आग्रह न करता हो। चाहे सरकार डॉक्टर मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व की हो, चाहे वो सरकार मेरे नेतृत्व की हो। सांसदों की एक एक मांग लगातार रहती है और वो अपने क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क के लिए कार्य के लिए हैं। हम सभी सांसदों के लिए गर्व की बात है देश को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की कल्पना, उसकी योजना यह तोहफा अगर किसी ने दिया तो यह हमारे उपराष्ट्रपति जी ने दिया, आदरणीय वैक्या जी ने दिया। जो आज...और यह चीजें तब निकलती हैं कि गांव के प्रति, गरीब के प्रति, किसान के प्रति, दलित के प्रति, पीड़ित शोषित के प्रति अपनत्व होता है, उनको कठिनाईयों से बाहर निकालने का संकल्प होता है, तब यह होता है।

आज जब उपराष्ट्रपति पद के रूप में वैक्या जी हमारे बीच में हैं, इस सदन में हम सबकी एक कठिनाई रहेगी, कुछ पल, क्योंकि Bar में से कोई वकील अगर जज बन जाता है तो शुरू-शुरू में Court में उसके साथ ही नीचे Bar के Members जब बात करते हैं, तो जरा अटपटा लगता है कि कल तो यह मेरे साथ खड़ा रहता था, मेरे साथ बहस करता था, और आज यहां मैं इसको कैसे! तो कुछ पल हम सबके लिए भी, खासकर इस सदन के सदस्यों के लिए जिन्होंने इतने साल उनके साथ एक दोस्ताना रूप में काम किया है और जब इस पद पर बैठे हैं तो हमने भी... और हमारे लोकतंत्र की विशेषता है कि व्यवस्था के अनुकूल हम अपनी कार्यशैली को भी बनाते हैं।

और मुझे विश्वास है कि भले ही हमारे बीच से इतने लम्बे समय से राज्यसभा के सदस्य रह करके, हर बारीकी से निकले हुए, एक पके-पकाए व्यक्ति, उपराष्ट्रपति और इस सभा गृह के सभापति के रूप में जब हम लोगों का मार्गदर्शन करेंगे, हमें दिशा देंगे, इसकी गरिमा को और ऊपर उठाने में उनका योगदान बहुत बड़ा होगा, मुझे पूरा विश्वास है एक बहुत बड़े बदलाव के संकेत में देख रहा हूं। और वो अच्छे के लिए होंगे, अच्छाई के लिए होंगे। और आज जब वैक्या जी इस गरिमापूर्ण पद को ग्रहण कर रहे हैं तब, मैं उसी बात को स्मरण करना चाहूंगा

“अमल करो ऐसा अमन में,

अमल करो ऐसा अमन में,

जहां से गुजरे तुम्हारी नज़रें,

उधर से तुम्हें सलाम आए।”

और उसी को जोड़ते हुए मैं कहना चाहूंगा -

“अमल करो ऐसा सदन में,

जहां से गुजरे तुम्हारी नज़रें,

उधर से तुम्हें सलाम आए।”

बहुत-बहुत शुभकामनाएं! बहुत-बहुत धन्यवाद!

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

10-अगस्त-2017 13:45 IST

उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के विदाई के अवसर पर राज्य सभा में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आदरणीय सभापति जी,

एक दीर्घकालीन सेवा के बाद, आज आप नई कार्यक्षेत्र की तरफ प्रयाण करेंगे ऐसा मुझे पूरा भरोसा है, क्योंकि physically आपने अपने आपको काफी fit रखा है। एक ऐसा परिवार जिसका करीब सौ साल का इतिहास सार्वजनिक जीवन का रहा हो, उनके नाना, उनके दादा कभी राष्ट्रीय पार्टी के अध्यक्ष रहे, कभी संविधान सभा में रहे, एक प्रकार से आप उस परिवार की पृष्ठभूमि से आते हैं, जिनके पूर्वजों का सार्वजनिक जीवन में, विशेष करके कांग्रेस के जीवन के साथ और कभी खिलाफत मूवमेंट के साथ भी काफी कुछ सक्रियता रही।

आपका अपना जीवन भी एक Career Diplomat आ रहा। अब Career Diplomat क्या होता है, वह तो मुझे प्रधानमंत्री बनने के बाद ही समझ आया, क्योंकि उनके हंसने का क्या अर्थ होता है, उनके हाथ मिलाने का तरीके क्या अर्थ होता है, तुरंत समझ नहीं आता है! क्योंकि उनकी ट्रेनिंग ही वही होती है। लेकिन उसको कौशल्य का उपयोग यह 10 साल यहां जरूर यहाँ हुआ होगा। यह सब को संभालने में, इस कौशल्य ने किस प्रकार से लाभ इस सदन को पहुंचाया होगा।

आप के कार्यकाल का बहुत सारा हिस्सा West Asia से जुड़ा रहा है As a Diplomat. उसी दायरे में जिंदगी के बहुत सारे वर्ष आपके गए, उसी माहौल में, उसी सोच में, उसी debate में, ऐसे लोगों के बीच में रहे। वहां से रिटायर होने के बाद भी ज्यादातर काम वहीं रहा आपका, Minority Commission हो या Aligarh University हो, तो एक दायरा आपका वही रहा। लेकिन यह 10 साल एक अलग जिम्मा आपके हिस्से में आया और पूरी तरह एक एक पल संविधान, संविधान, संविधान के ही के दायरे में चलाना और आपने उसको बखूबी निभाने का भरपूर प्रयास किया।

हो सकता है कुछ छटपटाहट रही होगी भीतर आपके भी, लेकिन आज के बाद वह संकट आपको नहीं रहेगा और मुक्ति का आनंद भी रहेगा और अपनी मूलभूत जो सोच रही होगी, उसके अनुसार आपको कार्य करने का, सोचने का, बात बताने का अवसर भी मिलेगा।

आपसे मेरा परिचय ज्यादा तो रहा नहीं, लेकिन जब भी मिलना हुआ, काफी कुछ आपसे जानने-समझने को मिलता था। मेरी विदेश यात्रा में जाने से पहले, आने के बाद, आपसे जब बात करने का मौका मिलता था, तो आप की जो एक insight थी उसका मैं जरूर अनुभव करता था और वह मुझे चीजों को जो दिखती हैं, उसके सिवाय क्या हो सकती हैं, इसको समझने का एक अवसर देती थी और इसलिए मैं हृदय से आपका बहुत आभारी हूँ, मेरी तरफ से हृदय से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

राष्ट्र के उप-राष्ट्रपति के रूप में, आपकी सेवाओं के लिए दोनों सदन की तरफ से, देशवासियों की तरफ से भी आपके प्रति आभार का भाव है और आपका यह कृतित्व, यह अनुभव और इस पद के बाद निवृत्ति, अपने आप में एक लम्बे अरसे तक, समाज जीवन में उस बात को एक वजन रखती है। राष्ट्र के संविधान की मर्यादाओं पर चलते हुए देश का मार्गदर्शन करने में आपका समय और शक्ति काम आएगा, ऐसी मेरी पूरी शुभकामनाएं हैं।

बहुत बहुत धन्यवाद!

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो/सुरेन्द्र शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

09-अगस्त-2017 16:55 IST

भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ पर लोकसभा में विशेष चर्चा के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपका और सदन के सभी आदरणीय सदस्यों का आभार भी व्यक्त करता हूँ और हम सब आज गौरव भी महसूस कर रहे हैं कि अगस्त क्रांति का, उन्हें स्मरण करने का, इस सदन के पवित्र स्थान पर हम लोगों को सौभाग्य मिला है। हम में से बहुत लोग हैं जिन्हें शायद अगस्त क्रांति, 9 अगस्त, उन घटनाओं का स्मरण होगा। लेकिन उसके बाद भी हम लोगों के लिए भी पुनः स्मरण प्रेरणा का कारण बनता है और तमाम जीवन में ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का बार-बार स्मरण, जीवन की भी अच्छी घटनाओं का बार-बार स्मरण जीवन को एक नई ताकत देता है; राष्ट्र-जीवन को भी नई ताकत देता है। उसी प्रकार से हमारी जो नई पीढ़ी है, उन तक भी ये बात पहुंचाना हम लोगों का कर्तव्य रहता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इतिहास के एक स्वर्णिम पृष्ठों को, उस समय के माहौल को, उस समय के हमारे महापुरुषों के बलिदान को, कर्तव्य को, सामर्थ्य को, आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का भी हर पीढ़ी का दायित्व रहता है।

जब अगस्त क्रांति के 25 साल हुए, 50 साल हुए, देश के सभी लोगों ने उन घटनाओं का स्मरण किया था। आज 75 साल हो रहे हैं, और मैं इसे बड़ा महत्वपूर्ण मानता हूँ। और इसलिए मैं अध्यक्ष महोदया जी का आभारी हूँ कि आज हमें ये अवसर मिला है।

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में 9 अगस्त एक ऐसी अवस्था में है, इतना व्यापक, इतना तीव्र आंदोलन, अंग्रेजों ने भी कल्पना नहीं की थी।

महात्मा गांधी, वरिष्ठ नेता, सब जेल चले गए। और वही पल था कि अनेक नए नेतृत्व ने जन्म लिया। लाल बहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, कई अनेक youth युवा उस समय उस जो खाली जगह थी उसको भरा और आंदोलन को आगे बढ़ाया। इतिहास की ये घटनाएं हम लोगों के लिए एक नई प्रेरणा, नया सामर्थ्य, नया संकल्प, नया कृतत्व जगाने के लिए किस प्रकार से अवसर बने, ये हम लोगों का निरंतर प्रयास रहना चाहिए।

1947 में देश आजाद हुआ। एक प्रकार से 1857 से लेकर 1947 तक, आजादी के आंदोलन के अलग-अलग पड़ाव आए, अलग-अलग पराक्रम हुए, अलग-अलग बलिदान हुए; उतार-चढ़ाव भी आए। अलग-अलग मोड़ पर से ये आंदोलन गुजरा, लेकिन सैतालिस की आजादी के पहले बयालिस की घटना एक प्रकार से अंतिम व्यापक आंदोलन था, अंतिम व्यापक जन-संघर्ष था और उस जन-संघर्ष ने आजादी के लिए देशवासियों को सिर्फ समय का ही इंतजार था, वो स्थिति पैदा कर दी थी। और जब हम आजादी के इस आंदोलन की ओर देखते हैं, तो nineteen forty two (1942) एक ऐसी पीठिका तैयार हुई थी, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, एक साथ देश के हर कोने में आजादी का बिगुल बजा था। और उसके बाद महात्मा गांधी का विदेश से लौटना, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य और "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" उस भाव को प्रकट करना, 1930 में महात्मा गांधी की डांडी मार्च, नेताजी सुभाष बोस द्वारा आजाद हिंद फौज की स्थापना, अनेक youth वीर भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद, चाफेकर बंधु, अनगिनत अपने-अपने समय पर बलिदान देते रहे। ये सारा ने एक पीठिका तैयार की और उस पीठिका का परिणाम था कि बयालिस में देश को एक उस छोर पर लाकर रख दिया कि अब नहीं तो कभी नहीं। आज नहीं होगा तो फिर कभी नहीं होगा, ये मिजाज देशवासियों का बन गया था। और इसके कारण उस आंदोलन में इस देश का छोटा-मोटा हर व्यक्ति जुड़ गया था। कभी लगता था राजाजी का आंदोलन elite class के द्वारा चल रहा है, लेकिन बयालिस की घटना, देश का कोई कोना ऐसा नहीं था, देश का कोई वर्ग ऐसा नहीं था, देश की कोई सामाजिक अवस्था ऐसी नहीं थी, कि जिसे इसे अपना न माना हो। और गांधी के शब्दों को ले करके वो चल पड़े थे। यही तो आंदोलन था, जब अंतिम स्वर में बात आई भारत छोड़ो। और सबसे बड़ी बात है महात्मा गांधी के पूरे आंदोलन में जो भाव कभी प्रकट नहीं हो सकता था, पूरे गांधी के चिंतन-मनन और विचार और आचार को देखें, उससे हट करके घटना घटी। इस महापुरुष ने कहा, करेंगे या मरेंगे। गांधी के मुंह से करेंगे या मरेंगे, शब्द देश के लिए अजूबा था। और इसलिए गांधी को भी उस समय कहना पड़ा था, और उन्होंने शब्द कहा था, "आज से आप मैं हर एक को स्वयं को एक स्वतंत्र महिला या पुरुष समझना चाहिए और इस प्रकार काम करना चाहिए, मानों आप स्वतंत्र हैं। मैं पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी चीज पर संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ। 'हम करेंगे या मरेंगे।' ये बापू के शब्द थे और बापू ने स्पष्ट भी किया था कि मैंने मेरे अहिंसा के मार्ग को छोड़ा नहीं है। लेकिन आज स्थिति ऐसी और वो समय जन- सामान्य

का दबाव ऐसा था कि बापू के लिए भी उसका नेतृत्व संभालते हुए उन जन-भावनाओं के अनुकूल इन शब्द प्रयोगों को करना हुआ था।

मैं समझता हूँ कि उस समय समाज के जब सभी वर्ग जुड़ गए, गांव हो, किसान हो, मजदूर हो, टीचर हो, स्टूडेंट हो हर कोई इस आंदोलन के साथ जुड़ गए और करेंगे या मरेंगे और बापू तो यहां तक कहते थे कि अंग्रेजों की हिंसा के कारण कोई भी शहीद होता है तो उसके शरीर पर एक पट्टी लिखनी चाहिए करेंगे या मरेंगे और वो इस आजादी का आंदोलन का शहीद है। इस प्रकार की ऊंचाई तक इस आंदोलन को बापू ने ले जाने का प्रयास किया था और उसी का परिणाम था कि भारत गुलामी की जंजीरो से मुक्त हुआ। देश उस मुक्ति के लिए छटपटा रहा था नेता हो या नागरिक किसी की इस भावना की तीव्रता में कसु भर भी अंतर नहीं था और मैं समझता हूँ देश जब उठ खड़ा होता है सामूहिकता की जब शक्ति पैदा होती है, लक्ष्य निर्धारित होता है और निर्धारित लक्ष्य पर चलने के लिए लोग कृतसंगत होकर के चल पड़ते हैं तो 42 से 47 पांच साल के भीतर-भीतर बेड़िया चुर-चुर हो जाती हैं और मां भारती आजाद हो जाती है और इसलिए और उस समय रामवृक्ष बेनीपुरी उन्होंने एक किताब लिखी है जंजीरें और दीवारें और उस प्रस्तुति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है “एक अदभुत वातावरण पूरे देश में बन गया। हर व्यक्ति नेता बन गया और देश का प्रत्येक चौराहा करो या मरो आंदोलन का दफ्तर बन गया। देश ने स्वयं को क्रांति के हवन कुंड में झाँक दिया। क्रांति की ज्वाला देश भर में धू-धू कर जल रही थी। बम्बई ने रास्ता दिखा दिया। आवागमन के सारे साधन ठप हो चुके थे। कचहरियां विरान हो चली थीं। भारत के लोगों की वीरता और ब्रिटिश सरकार की नृशंसता की खबरें पहुंच रही थी। जनता ने करो या मरो के गांधीवादी मंत्र को अच्छी तरह से दिल में बैठा लिया था”।

उस समय का ये वर्णन उस किताब जब ये पढ़ते हैं तो चलता है कि किस प्रकार का माहौल होगा और एक वो समय था कि ये घटना ने ये बात सही है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद जो था इसका आरंभ हिन्दुस्तान में हुआ और इस घटना के बाद उसका अंत भी हिन्दुस्तान से हुआ था। भारत आजाद होना सिर्फ भारत की आजादी नहीं थी 1942 के बाद विश्व के जिन-जिन भू-भाग में अफ्रीका में एशिया में इस उपनिवेशवाद के खिलाफ एक ज्वाला भड़की उसकी प्रेरणा केंद्र भारत बन गया था। और इसलिए भारत सिर्फ भारत की आजादी नहीं एक आजादी की ललक विश्व के कई भागों में फैलाने में भारत के जनसामान्य का संकल्प और कृतव्यय कारण बन गया था और कोई भी भारतीय इस बात के लिए गर्व कर सकता है और उसको हमने देखा कि एक बार भारत आजाद हुआ उसके बाद एक के बाद एक उपनिवेशवाद के सारे लोगों के झंडे ढहते गए और आजादी सब युग तक पहुंचने लगी। कुछ ही वर्षों में दुनिया के सारे देशों में आजादी प्राप्त हो गई और ये काम बताता है कि ये भारत की इच्छाशक्ति का प्रबल इच्छाशक्ति का एक उत्तमोत्तम परिणाम था, हमारे लिए सबक यही है कि जब हम एक मन करके संकल्प लेकर के पूरे सामर्थ्य के साथ निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जुड़ जाते हैं तो ये देश की ताकत है कि हम देश को संकटों से बाहर निकाल देते हैं, देश को गुलामी की जंजीरों से बाहर निकाल सकते हैं, देश को नए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तैयार कर सकते हैं, ये इतिहास ने बताया है और इसलिए उस समय इस पूरे आंदोलन को और पूज्य बापू के व्यक्तित्व को लगते हुए राष्ट्र कवि सोहन लाल द्विवेदी की जो कविता है बापू का सामर्थ्य क्या है उसको प्रकट करती है। कविता में उन्होंने कहा था

चल पड़े जिधर दो डग, मग में

**चल पड़े कोटि पग उसी ओर
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर**

जिस तरफ गांधी के दो कदम चले थे उस तरफ अपने-आप करोड़ों लोग चल पड़ते थे, जिधर गांधी जी की दृष्टि टिक जाती थी उधर करोड़ों करोड़ आंखें देखने लग जाती थी और इसलिए इस महान व्यक्तित्व ने लेकिन आज जब हम 2017 में हैं हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि आज हमारे पास गांधी नहीं है आज हमारे पास उस समय जो ऊंचाई वाला नेतृत्व था वो आज हमारे पास नहीं है लेकिन सवा सौ करोड़ देशवासियों के विश्वास के साथ बैठे हुए हम सब लोग मिलकर के उन सपनों को पूरा करने का प्रयास करें तो मैं मानता हूँ कि गांधी के सपनों को उन स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करना मुश्किल काम नहीं है और आज आज का ये अवसर किसी बात के लिए हमें उस समय भी जो वैश्विक हालात थे 1942 में भारत की आजादी के लिए बहुत अनुकूल माहौल थे जो भी इतिहास से परिचित है उसे मालूम है मैं समझता हूँ आज फिर से एक बार 2017 में जबकि Quit India Movement हम 75 साल मना रहे हैं उस समय विश्व में वो अनुकूलता है जो भारत के लिए बहुत सहानुकूल है और अनुकूल व्यवस्था का फायदा हम जितना जल्दी उठा दें जैसे उस समय विश्व के कई देशों के लिए हम प्रेरणा का कारण बने थे अगर आज हम मौका ले लें तो आज फिर से एक बार हम विश्व के कई देशों के लिए उपयोगी हो सकते हैं प्रेरणा का कारण बन सकते हैं, ऐसे मोड़ पर आज हम खड़े हैं 1942 & 2017 इस दोनों में वैश्विक परिवेश में भारत का महात्म्य, भारत के लिए अवसर समान रूप से खड़े हैं और उस समय हम इस बात को कैसे लें, हम उसकी जिम्मेवारी कैसे लें मैं मानता हूँ इतिहास के इन प्रकरणों से सामर्थ्य से प्रेरणा लेकर के

हमारे लिए दल से बड़ा देश होता है राजनीति से ऊपर राष्ट्रनीति होती है मेरे अपने ऊपर सवा सौ करोड़ देशवासी होते हैं अगर उस भाव को लेकर के हम उड़ चले हम सब मिलकर के आगे बढ़ें तो हम इन समस्याओं के खिलाफ सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकते हैं हम इस बात से इंकार कैसे कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार रूपी दीमक ने देश को कैसे तबाह करके रखा हुआ है। राजनीतिक भ्रष्टाचार हो, सामाजिक भ्रष्टाचार हो या व्यक्तिगत भ्रष्टाचार हो कल क्या हुआ कब किसने किया उसके लिए विवाद के लिए समय बहुत होते हैं लेकिन आज पवित्र पल हम आगे तो ईमानदारी का उत्सव मना सकते हैं ईमानदारी का संकल्प लेकर के देश का नेतृत्व कर सकते हैं क्या देश को ले जा सकते हैं ये समय की मांग है देश के सामान्य मानवीकी की मांग है, गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा ये हमारे सामने चुनौतियां हैं इन चुनौतियों को हम सरकार की चुनौतियां न माने वो चुनौतिया देश की है देश की गरीब के सामने संकट भरे सवाल खड़े हैं और इसलिए देश के लिए जीने मरने वाले देश के लिए संकल्प करने वाले हम सब लोगों का दायित्व बनता है इसको पूरा करने के लिए हम कुछ मुद्दों पर 1942 में भी अलग-अलग धारा के लोग थे। हिंसा में विश्वास करने वाले भी लोग थे नेता जी सुभाष बाबू की सोच अलग थी लेकिन 1942 में सबने एक स्वर से कह दिया था आपको गांधी के नेतृत्व में Quit India यही हमारा मार्ग है। हमारे भी लालन-पालन विचारधारा अलग-अलग रही होगी। लेकिन ये समय की मांग है कि हम कुछ बिंदुओं से देश को मुक्त कराने के लिए संकल्प का अवसर लेकर के चले चाहे गरीबी हो, भूखमरी हो, अशिक्षा हो अंत स्वतः हो। महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज का सपना कितना पीछे छूट गया क्या कारण है कि गांव लोग छोड़ छोड़ कर के शहरों की ओर बस रहे हैं। गांव की उस चिंता को गांधी के मन में जो गांव था क्या हम हमारे भीतर उसको पुर्नजीवित कर सकते हैं क्या गांव गरीब किसान दलित पीढ़ी शोषित वंचित उसके जीवन के लिए अगर हम कुछ कर सकते हैं मिलकर के करना है ये सवाल मेरा और तेरा नहीं है ये सवाल इस पार और उस पार का नहीं है ये हम सबका है सवा सौ करोड़ देशवासियों का है। सवा सौ करोड़ देशवासी के जनप्रतिनिधि का है और यही तो समय होता है जब वो प्रेरणा हम लोगों को कुछ कर लेने की शक्ति देती है और उसको लेकर के हम आगे चल सकते हैं हम ये भी जानते हैं देश में जाने अनजाने में अधिकार भाव प्रबल होता चला गया, कर्तव्य भाव लुप्त होता गया। राष्ट्रजीवन के अंदर, समाज जीवन के अंदर अधिकार भाव का महात्म्य उतना ही रहते हुए भी अगर कर्तव्य भाव को थोड़ा सा भी हम कम आंकने लगेंगे तो समाज जीवन में कितनी बड़ी मुसीबत होती है और दुर्भाग्य से हम लोगों का way of life हमारे चरित्र में कुछ चीजें घुस गई हैं जिसमें हमें बुराई नहीं लगता है मैं गलत कर रहा हूं अगर मैं चौराहे पर red light cross करके निकल जाता हूं तो मुझे लगता ही नहीं कि मैं कानून तोड़ रहा हूं मैं कहीं पर थूक देता हूं गंदगी करता हूं हमें लगता ही नहीं कि मैं गलत कर रहा हूं हम अपने कर्तव्य भाव से एक प्रकार से हमारे जहन में हमारे way of life में इस प्रकार के नियमों को तोड़ना कानूनों को तोड़ना ये स्वभाव बनता चला गया। छोटी-छोटी घटनाएं हिंसा की ओर ले जा रही हैं अस्पताल में किसी डाक्टर के द्वारा कुछ पेशेन्ट का कुछ हुआ डाक्टर दोषी है नहीं है, अस्पताल दोषी हैं नहीं हैं, रिश्तेदार जाते हैं अस्पताल को आग लगा देते हैं। डाक्टर को मारते हैं पीटते हैं हर छोटी-मोटी घटना अगर एक्सीडेंट हो गया हम कार को जला देते हैं ड्राइवर को मार देते हैं। ये जो चला है ये हम law of abiding citizen के नाते हमारा कर्तव्य होना चाहिए हम मानने लगे हैं कि हमारे से कुछ छूट गया है। हमारी way of life में कुछ ऐसी चीजें घुस गई हैं जैसे हमें लगता ही नहीं है कि हम कानून तोड़ रहे हैं और इसलिए ये leadership की जिम्मेवारी होती है कि समाज के अंदर हम सबकी जिम्मेवारी होती है कि हम समाज के अंदर इन दोषों से मुक्ति दिलाकर के समाज के अंदर कर्तव्य भाव को जगाए।

शौचालय स्वच्छता ये विषय मजाक के नहीं हैं उन मां बहनों की परेशानी समझो तब पता चलता है कि जब शौचालय नहीं होता तो रात के अंधेरे का इंतजार का समय दिन कैसे बिताना पड़ता है और इसलिए शौचालय बनाना एक काम है लेकिन समाज की मानसिकता बदल कर के शौचालय का उपयोग करना ये जनसामान्य की शिक्षा के लिए आवश्यक है इस बात को हमें जगाना होगा और ये भाव कानूनों से नहीं होता है, कानून बनाने से नहीं होता है कानून सिर्फ मदद कर सकता है लेकिन कर्तव्य भाव जगाने से ज्यादा हो सकता है और इसलिए हम लोगों को करना होगा। हमारे देश की माताएं बहनें देश के अंदर कम से कम देश पर जो उनका बोझ है।

देश को कम से कम जिनका बोझ सहना पड़ता है, वो अगर कोई वर्ग है तो इस देश की माताएं, बहनें हैं, महिलाएं हैं। उनका सामर्थ्य हमें कितनी ताकत दे सकता है, उनकी भागीदारी हमारे विकास के अंदर हमें कितना बल दे सकती है। पूरे आजादी के आंदोलन में देखिए महात्मा गांधी के साथ आंदोलन ये जहां-जहां हुआ, अनेक ऐसी माताएं-बहनें उस आंदोलन का नेतृत्व करती थीं और देश को आजादी दिलाने में भी हमारी माताओं-बहनों का उस युग में भी उतना ही योगदान था। आज भी राष्ट्र के जीवन में उनका उतना ही योगदान है। उसको आगे बढ़ाने की दिशा में हम लोगों ने कर्तव्य से आगे बढ़ना चाहिए।

ये बात सही है कि 1857 से 1942, हमने देखा कि आजादी का आंदोलन अलग-अलग पड़ाव से गुजरा, उतार-चढ़ाव आए, अलग-अलग मोड़ आए, नेतृत्व नए-नए आते गए, कभी क्रांति का पक्ष ऊपर हो गया तो कभी अहिंसा का पक्ष ऊपर हो गया। कभी दोनों धाराओं के बीच टकराव का भी माहौल रहा, कभी दोनों धाराएं एक-दूसरे को पूरक भी हुईं। लेकिन हमने देखा है, लेकिन ये सारा 1857 से 1942 का कालखंड हम देखें, एक प्रकार से incremental था। धीरे-धीरे बढ़ रहा था, धीरे-धीरे फैल रहा था, धीरे-धीरे लोग जुड़ रहे थे। लेकिन Nineteen Forty Two to Nineteen Forty

Seven, वो incremental change नहीं था। एक disruption का environment था और उसने सारे समीकरणों को खत्म करके आजादी देने के लिए अंग्रेजों को मजबूर कर दिया, जाने के लिए मजबूर कर दिया। 1857 से 1942, धीरे-धीरे कुछ होता रहता था, चलता रहता था, लेकिन Forty Two से Forty Seven, वो स्थिति नहीं थी।

हम भी देखें, समाज जीवन में हम पिछले 100, 200 साल का इतिहास देखें तो विकास की यात्रा एक incremental रही थी। धीरे-धीरे दुनिया आगे बढ़ रही थी, धीरे-धीरे दुनिया अपने-आपको बदल रही थी। लेकिन पिछले 30-40 साल में दुनिया में अचानक बदलाव आया, जीवन में अचानक बदलाव आया और technology ने बहुत बड़ा roll play किया। कोई कल्पना नहीं कर सकता जो इस 30-40 साल में दुनिया में जो बदलाव आया है, व्यक्ति के जीवन में, मानव-जीवन में, सोच में जो बदलाव आया है; 30-40 साल पहले हमें नजर भी नहीं आता था। एक disruption वाला एक positive change हम अनुभव करते हैं।

जिस प्रकार से Incremental से बाहर निकल करके एकदम से एक high jump की तरफ चले गए, मैं समझता हूँ 2017 - 2022, Quit India के 75 साल और आजादी के 75 साल के बीच का पांच साल, Forty Two to Forty Seven का जो मिजाज था, वही मिजाज अगर हम दोबारा देश में पैदा करें Two Thousand Seventeen to Two Thousand Twenty Two, आजादी के 75 साल मनाएंगे तब, तब हम देश के, हमारे आजादी के वीरों की जो कामनाएं थीं, उन सपनों को पूरा करने के लिए हम अपने-आपको खपाएंगे। हम अपने संकल्प को ले करके आगे चलेंगे। मुझे विश्वास है न सिर्फ हमारे देश का ही भला होगा, लेकिन जैसे Forty two to Forty seven की सफलता के कारण दुनिया के अनेक देशों को लाभ मिला, आजादी की ललक पैदा हुई, ताकत मिली, भारत को आज दुनिया के कई देश, एक भाग ऐसा है जो भारत को उस रूप में देख रहा है। अगर हम भारत को Two thousand Seventeen to Two thousand Twenty Two, जो कि हम लोगों की जिम्मेवारी का कालखंड है, अगर हम विश्व के सामने भारत को उस ऊंचाई पर लेके जाते हैं तो विश्व का एक बहुत बड़ा समुदाय है, जो कि नेतृत्व की तलाश में, मदद की तलाश में है, किसी के प्रयोगों से सीखना चाहता है; भारत उस पूर्ति के लिए सामर्थ्यवान है; अगर उसको करने के लिए हम कोशिश करें, मैं समझता हूँ देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। और इसलिए एक सामूहिक इच्छा-शक्ति जगाना, देश को संकल्पबद्ध करना, देश के लोगों को साथ जोड़ करके चलना और इन पांच वर्ष के महत्व को हम अगर आगे बढ़ाएंगे तो मुझे विश्वास है कि हम कुछ मुद्दों पर सहमति बना करके बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

हमने अभी-अभी देखा जीएसटी, और ये मैं बार-बार कहता हूँ ये मेरा सिर्फ राजनीतिक statement नहीं है, ये मेरा conviction है। जीएसटी की सफलता किसी सरकार की सफलता नहीं है, जीएसटी की सफलता किसी दल की सफलता नहीं है। जीएसटी की सफलता इस सदन में बैठे हुए लोगों की इच्छाशक्ति का परिणाम है। चाहे यहां बैठे हों, चाहे वहां बैठे हों, ये सबको जाता है, राज्यों को जाता है, देश के सामान्य व्यापारी को जाता है; और उसी के कारण ये संभव हुआ है। जो देश के राजनीतिक नेतृत्व अपनी प्रतिबद्धता के कारण इतना बड़ा काम कर लेती है, दुनिया के लिए अजूबा है। जीएसटी विश्व के लिए बहुत बड़ा अजूबा है, उसके Scale को देख करके हुए, अगर ये देश ये कर सकता है, तो और भी सारे निर्णय ये देख मिल-बैठ करके कर सकता है। और सवा सौ करोड़ देशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में, सवा सौ करोड़ देशवासियों को साथ ले करके 2022 को संकल्प ले करके अगर हम चलेंगे, मुझे विश्वास है कि जो परिणाम हमें लाना है, और वो परिणाम हम लाके रहेंगे।

महात्मा गांधी ने नारा दिया था करो या मरो, उस समय का सूत्र था, करेंगे या मरेंगे। आज 2017 में 2022 को भारत कैसे हो, ये संकल्प ले करके अगर चलना है, तो हम लोगों को भी हम सब मिल करके देश से भ्रष्टाचार दूर करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर गरीबों को उनका अधिकार दिलाएंगे, और दिलाकर रहेंगे। हम सभी मिलकर नौजवानों को स्वरोजगार के और अवसर देंगे और देकर रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से कुपोषण की समस्या को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकने वाली बेड़ियों को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से अशिक्षा खत्म करेंगे और करके रहेंगे। और कोई भी बहुत विषय हो सकते हैं, लेकिन अगर उस समय का मंत्र था करेंगे या मरेंगे, तो आजाद हिन्दुस्तान में 75 साल बाद आजादी का पर्व मनाने की ओर आगे बढ़ रहे हैं तब करेंगे और करके रहेंगे, इस संकल्प को ले करके हम आगे बढ़ेंगे। ये संकल्प किसी दल का नहीं, ये संकल्प किसी सरकार का नहीं, ये संकल्प सवा सौ करोड़ देशवासी, सवा सौ करोड़ देशवासियों के जन-प्रतिनिधि, इन सबका मिल करके जब संकल्प बनेगा तो मुझे विश्वास है संकल्प से सिद्धि के ये पांच साल, 2017 से 2022, आजादी के 75 साल, आजादी के दीवानों को सपना पूरा करने का सामर्थ्यवान समय, इसको हम प्रेरणा का कारण बनाएं। आज अगस्त क्रांति दिवस पर उन महापुरुषों का स्मरण करते हुए, उनके त्याग, तपस्या, बलिदान का स्मरण करते हुए, उस पुण्य स्मरण से आशीर्वाद मांगते हुए, हम सब मिल करके, कुछ बातों पर सहमति बना करके देश का नेतृत्व दें, देश को समस्याओं से मुक्त करें। सपने, सामर्थ्य, शक्ति और लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ें, इसी एक अपेक्षा के साथ मैं फिर एक बार अध्यक्ष महोदया जी, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ और आजादी के दीवानों को नमन करता हूँ।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो/निर्मल शर्मा/ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

15-दिसंबर-2017 11:15 IST

संसद के शीतकालीन सत्र के शुरुवात पर संसद भवन के बाहर प्रधानमंत्री द्वारा मिडिया को दिए गये वक्तव्य का मूल पाठ
Good Morning Friends,

आमतौर पर दिवाली के साथ-साथ ठंड का मौसम भी प्रारंभ हो जाता है। लेकिन Global Warming, Climate Change इसका प्रभाव ये है कि अभी भी ठंड उतनी मात्रा में अनुभव नहीं हो रही है।

लेकिन हमारा Winter Session शुरू हो रहा है। और मुझे विश्वास है, कि 2017 में प्रारंभ हो रहा ये Winter Session, जो 2018 तक चलेगा, और कई महत्वपूर्ण सरकार के कामकाज भी, जो दूरगामी प्रभाव पैदा करने वाले हैं, वो सदन में आएंगे, अच्छी बहस हो, सकारात्मक बहस हो, innovative सुझावों के साथ बहस हो, तो संसद के समय का उपयोग देश के लिए अधिक कारगर निवरता है।

और इसीलिए, मुझे विश्वास है कल भी हमारी ये All Party Meeting हुई, उसमें भी स्वर यही है, कि देश को आगे बढ़ाने की दिशा में इस सदन के सत्र का उपयोग सकारात्मक रूप से हो। मैं भी आशा करता हूं, कि सकारात्मक रूप से सदन का सत्र चलेगा, देश लाभान्वित होगा, लोकतंत्र मजबूत होगा, सामान्य मानव की आशा, आकांक्षाओं को परिपूर्ण करने में एक नया विश्वास पैदा होगा।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK